ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 29 18 से 24 जुलाई, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 आषाढ़ शु.-10

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

प्राकृतिक प्रक्रिया को धार्मिक अन्धविश्वास से जोड़कर आस्था का अनैतिक दोहन बन्द होना चाहिए

— स्वामी अग्निवेश

आज से 138 साल पहले वेदों के अप्रतिम विद्वान एवं क्रांतिकारी धर्म सुधारक महर्षि दयानन्द जी ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अमरनाथ के शिवलिंग को अंधविश्वास की उपज बताया था और सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इस प्रकार के अनेकानेक पाखण्ड प्रसंगों का बड़ा गहरा विश्लेषण कर मानवता को अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाने का ऐतिहासिक काम किया था। इससे पहले धार्मिक अंधविश्वास और पाखण्ड का खण्डन कबीर और गुरु नानकदेव आदि संतों ने भी किया था पर सच्चे शिव की सच्ची उपासना को मानव मात्र के जीवन का ध्येय बताकर जिस सांगोपांग तरीके से महर्षि दयानन्द जी ने किया वैसा उनसे पहले और उनके बाद भी कोई उदाहरण नहीं मिलता।

महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा लेकर ही सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी पिछले 45 वर्षों से अंधविश्वास की काली अंधेरी ताकतों को ललकारते रहे। इसी कड़ी में उन्होंने 17 मई, 2011 को श्रीनगर (कश्मीर) में अमरनाथ के शिवलिंग के ऊपर बयान में कहा था कि दो वर्ष पहले गर्मी से पिघल गये बर्फानी बाबा को तत्कालीन राज्यपाल जनरल सिन्हा ने हेलीकाप्टर से नकली बर्फ लाकर फिर से शिवलिंग खड़ा किया था। इस प्रकार एक प्राकृतिक प्रक्रिया को धार्मिक अंधविश्वास से जोड़कर आस्था का अनैतिक दोहन बंद करने की अपील स्वामी अग्निवेश जी ने की थी। इस पर काफी हो–हल्ला मचाया था धर्मध्वजियों ने। स्वामी अग्निवेश जी के पुतले जलाये और अग्निवेश जी का सिर काटकर लाने वाले को 10 लाख रुपये के पुरस्कार की घोषणा भी की। अहमदाबाद गुजरात में भ्रष्टाचार विरोधी रैली को संबोधित करने के उपरान्त स्वामी अग्निवेश जी पर जानलेवा हमला भी हुआ।

हरियाणा के हाँसी (हिसार) कोर्ट में उन पर मुकदमा भी दर्ज हुआ जो सुप्रीम कोर्ट तक गया और पूरे साल भर चलकर हरियाणा पंजाब हाईकोर्ट चण्डीगढ़ ने उसे पूरी तरह निरस्त भी कर दिया।

आर्य समाज की दुदुंभी बज उठी दयानन्द की जय हो गई। अंधविश्वास के मोर्चे पर फिर एक बड़ी जीत हुई।

पर क्या अंधविश्वास मर गया?क्या ठगी और अंधविश्वास का व्यापार बंद हो गया?केदारनाथ, बद्रीनाथ के मंदिरों में स्थापित प्राण प्रतिष्ठित पूजित देवाधि देव महादेव क्यों स्वयं मलबे में दब गये और मंदिर परिसर को अपने भक्तों की लाशों से पाट गये?जो शिव अपनी रक्षा नहीं कर सकता (चूहों से) वह मेरी आपकी रक्षा कैसे करेगा?यही प्रश्न तो पूछा था 14 वर्ष के बालक मूलशंकर ने अपने शिवभक्त पिता कर्षन तिवारी से टंकारा में?और जब प्रश्न का सही उत्तर नहीं मिला तो माता–पिता का आश्रय छोड़ मूलशंकर निकल पड़ा सच्चे शिव की तलाश में। वे जहाँ–जहाँ गये वहीं अंधविश्वास दनदनाता मिला। गुरुवर विरजानन्द के चरणों में जाकर वेद की ऋचाओं में सच्चे शिव के दर्शन हुए महर्षि दयानन्द जी को और उसी की उपासना को लक्ष्य बनाकर ''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधिकार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।'' (आर्य समाज का दूसरा नियम) महर्षि जी ने अपना क्रांतिकारी अभियान शुरू कर दिया, आर्य समाज की स्थापना कर।

दयानन्द जी ने तो 59 वर्ष की आयु में अपना बलिदान देकर आर्यों के लिए वसीयत कर दी – पाखण्ड–खंडिनी पताका फहराकर। यह परचम फहराया भी आर्य दिग्गजों ने डटकर सालों–साल और दिग्विजय करते चले गये। पर इधर आजादी के बाद पाखण्ड–खंडन मंद पड़ने लगा। देखते–देखते आर्य समाज एक क्रांतिकारी आंदोलन के बदले स्वयं एक पंथ में बदलने लगा। परिणाम स्वरूप पाखण्ड का बोलबाला होने लगा, बिना किसी प्रतिरोध के। 24 घंटे चलने वाले धार्मिक चैनलों पर अंधविश्वास का बाजार गर्म हो उठा। गुरु गुरुडम, अंधश्रद्धा की भीड़, भेड़ों की तरह उमड़ने–घुमड़ने लगी। 16–17 जून को उत्तराखण्ड की तबाही के पीछे पर्यावरण से खिलवाड़ जितना बड़ा कारण है उससे बड़ा कारण है सच्चे शिव के बदले नकली शिव की पूजा का ढोंग, व्यापार। भोली–भाली जनता को ठगने–लूटने के लिये राज–मठ और सेठ का नापाक गठजोड़ होने लगा और वही फूट पड़ा उत्तराखण्ड की त्रासदी के रूप में।

16 जुलाई, 2013, दैनिक जागरण की एक रिपोर्ट

यात्रा खत्म होने से 38 दिन पहले ही 'अंतर्ध्यान' हुए बाबा बर्फानी

ज्म्मू। बाबा बर्फानी के दर्शनों की आस लेकर आने वाले भक्तों के लिए बुरी खबर है। इस बार यात्रा समाप्ति से 38 दिन पहले ही शिवलिंग लगभग पूरी तरह से पिघल चुका है। पवित्र अमरनाथ यात्रा की समाप्ति रक्षाबंधन वाले दिन होती है।

अमरनाथ यात्रा : पचास फीसद कोटा व्यर्थ गया

एक न्यूज चैनल के अनुसार अमरनाथ गुफा का शिवलिंग पूरी तरह से पिघल चुका है। 28 जून से शुरू हुई यात्रा 38 दिन तक और चलनी है। अबतक लगभग 2.40 लाख श्रद्धालु बाबा बर्फानी के दर्शन कर चुके हैं।

पढ़ें : अमरनाथ यात्रा के श्रद्धालुओं में आई गिरावट

गौरतलब है कि 28 जून को पवित्र यात्रा शुरू होने से पहले ही मीडिया में बाबा बर्फानी के पिघलने की रिपोर्टे आई थी। तब कि मीडिया रिपोर्टो के अनुसार कहा गया था कि कश्मीर में लगातार बढ़ रहे तापमान का असर बाबा बर्फानी के पवित्र हिमलिंग पर भी होने लगा है। दावा किया जा रहा था कि पिछले एक महीने से पड़ रही अत्यधिक गर्मी और उमस के कारण जून में ही शिवलिंग पिघलने लगा है। हालांकि आधिकारिक तौर पर किसी ने इसकी पुष्टि नहीं की थी।

उल्लेखनीय है कि समुद्रतल से 3880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित श्री अमरनाथ की पवित्र गुफा में बाबा बर्फानी अपने हिमलिंग स्वरूप में विराजमान हैं। 28 जून से शुरू होने वाली यात्रा से पहले श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड ने 13 मई को पवित्र गुफा, शिवलिंग, मां पार्वती और श्रीगणेश के हिमस्वरूप की तस्वीरें जारी की थी। बोर्ड ने इन तस्वीरों के आधार पर दावा किया था कि बाबा बर्फानी का आकार इस बार यात्रा संपन्न होने तक लगभग 14 फुट की ऊंचाई तक रहेगा।

अलबत्ता वादी में जून महीने की शुरुआत में सूर्य देवता ने अपना रौद्र रूप दिखाते हुए तापमान को 34 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा दिया था। इसका असर पवित्र गुफा और उसके आसपास के इलाकों में भी हुआ। जिससे यात्रा शुरू होने से पहले ही पवित्र गुफा में पार्वती का हिमलिंग पहले की तरह नहीं रहा था। श्रीगणेश का हिमलिंग भी पिघल रहा था। उस समय बाबा बर्फानी की ऊंचाई पर हालांकि गर्मी का ज्यादा असर नहीं हुआ था, लेकिन जमीन पर हिमलिंग का आधार पिघल रहा था। सूत्रों के अनुसार यात्रा शुरू होने से पहले ही कुछ लोगों ने पवित्र गुफा तक पहुंचकर बाबा बर्फानी के मौजूदा स्वरूप की तस्वीरें और वीडियो भी अपने कैमरे में कैद की थीं। इसके आधार पर भी दावा किया जा रहा था कि बाबा बर्फानी पर गर्मी का असर हो रहा है।

इस बीच, श्री बाबा अमरनाथ की यात्रा को लेकर जुलाई के पहले पखवाड़े श्रद्धालुओं में काफी उत्साह नजर आया। 28 जून से शुरू हुई यात्रा में अब तक करीब 2.40 लाख श्रद्धालुओं ने पवित्र गुफा में शिवलिंग के दर्शन किए हैं। यात्रा के लिए हजारों की संख्या में श्रद्धालु जम्मू में रुके बिना सीधे बालटाल व पहलगाम पहुंच कर यात्रा पर जा रहे हैं, लेकिन जम्मू के आधार शिविर यात्री निवास में श्रद्धालुओं की संख्या में कमी आई है। यात्री निवास भगवती नगर से रविवार सुबह 1363 श्रद्धालुओं का जत्था पहलगाम व बालटाल के लिए रवाना हुआ, जिसमें 988 पुरुष, 299 महिलाएं, 26 बच्चे और 50 साधु शामिल थे, जो 44 वाहनों पर सवार होकर यात्रा पर गए। एक दो दिन में यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 2.50 लाख पार कर जाएगी। इस बार यात्रा 55 दिन की है। उत्तराखंड में प्राकृतिक त्रासदी का थोड़ा असर यात्रा पर दिखाई दे रहा है। अमरनाथ गुफा की वार्षिक तीर्थयात्रा 24 अगस्त तक चलेगी।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

Two incidents given below from the authentic biographies of Maharshi Dayanand Saraswati reveal the fact that he was against both - Hero Worship and Idol Worship:

स्थान – उदयपुर १८८२ ई०

कविराजा श्यामलदास के यह कहने पर कि आप जैसे महापुरुष का कोई समुचित स्मारक अवश्य बनना चाहिए, महर्षि (दयानन्द) ने कहा – 'मैं व्यक्ति पूजा का घोर विरोधी हूं । मेरी इच्छा है कि मृत्यु के पश्चात् मेरी भस्म किसी खेत में डाल दी जाए ताकि वह खाद बनकर किसी कृषक की फसल को सुधारे ।' उनकी धारणा थी कि विभिन्न प्रकार के जड़ स्मारक से मूर्तिपूजा की प्रथा को ही प्रोत्साहन मिलता है ।

(सन्दर्भः डॉ० भवानीलाल भारतीय कृत ष्नवजागरण के पुरोधा – महर्षि दयानन्द सरस्वतीष जीवनचरित्र , द्वितीय भाग, पृ० ८१५, प्रकाशक– श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी, राजस्थान, २००६ संस्करण)

Udaipur: 1882

One day Kaviraj Shyamaldas said that the country should raise a memorial to Swamiji. Swamiji replied, "Never do it." He suggested that his ashes may be thrown in a field to be some use there. He deprecated raising any memorial to him, lest people should begin to worship his idol.

(Ref: "Life of Dayananda Saraswati-World Teacher", by: Harbilas Sarda, p. 282, 1968 edition, Ajmer)

स्थान – मुम्बई १८७५ ई०

महर्षि के एक भक्त हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने आग्रह पूर्वक स्वामी जी का फोटो तैयार कराया । परन्तु महर्षि ने विशेष रूप से अपने भक्त जनों को आदेश दिया कि उनका चित्र या प्रतिकृति आर्य मन्दिरों में स्थापित न की जावें । उन्हें सम्भवतः यह आशंका थी कि मूर्तिपूजा के प्रति अन्ध आस्था रखनेवाले भारतवासी कहीं उनके चित्र की पूजा न करने लगें ।

(सन्दर्भः डॉ० भवानीलाल भारतीय कृत 'नवजागरण के पुरोधा – महर्षि दयानन्द सरस्वती' जीवनचरित्र , प्रथम भाग, पृ० ४६२, प्रकाशक– श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी, राजस्थान, २००६ संस्करण)

Mumbai: 1882

Harishchandra Chintamani proposed to take a photograph of Swamiji, but Swamiji objected saying that people and especially the Aryasamajists, may begin to offer worship to the photograph. He eventually agreed to be photographed on the condition that no copy of it may be placed in the Aryasamaj Hall."

(Ref: "Life of Dayananda Saraswati-World Teacher", by: Harbilas Sarda, p. 137, 1968 edition, Ajmer)

Both the biographies from where the referred incidents have been quoted are recognized among the most authentic and comprehensive biographies of Maharshi Dayananda.

It appears to me that at the time of the referred incidents Maharshi Dayananda might be suspecting that some immature, emotional, naïve persons coming from some Pauranic orthodox idol worshipping faiths or sects in to Aryasamaj might not be well versed in the Vedic concepts, and they in a traditional way prevalent in the so-called Hinduism might start bowing down to his (Maharshi's) picture kept in the Arya Samaj and initiate practicing idolatry in that way. Since most of the members of Arya Samaj during that formative period had been more or less with that type of Pauranic orthodox background, this suspicion might be the main cause of his disapproving the presence of his picture in the Arya Samaj.

Otherwise, Maharshi was well aware of the fact that Almighty God's picture or image cannot be made – being Omnipresent and Formless entity; but making image or picture or photograph of the person is quite possible as well as practical. For example: in 1876 (one year after founding the Arya Samaj in 1875) at Lucknow, he had told a gentleman that: "If someone's photograph is taken or a picture or an image (replica) is properly made and same is kept for the purpose of remembrance and to see or display, noting is wrong." (Ref: Hindi book "Dayananda Shastrarth Sangraha", i.e. Collection of debates & discourses of Swami Dayananda, page 79, Arsh Sahitya Prachar Trust 2010 edition)

Therefore, if in Arya Samaj Maharshi Dayananda's appropriate picture (one is sufficient, a series of his pictures is not essentially required) is kept and displayed and that too for the legitimate purpose of mere remembrance, for the sake of preservation of history, and to satisfy the natural inquisitiveness of the new comers to know about the founder of the society – there would not be anything wrong in principle. Yes, the scholars, preachers and the office bearers of the Arya Samaj must keep watchfulness to ensure that idolatry of any kind doesn't and cannot germinate around the same. Such type of vigilance is a must. Moreover, the members should also be made well aware of the philosophical basis of the refutation of idol worship done by the Arya Samaj.

Maharshi Dayananda's picture or photo should be properly placed and displayed in the Arya Samaj. It should be well maintained too. But it should not be decorated with flowers, garlands, lamps, lighting, fragrance stick (agarbattis) etc. and never to be bowed down to it. His picture is an inert – lifeless – insentient object. Maharshi Dayananda is no more. In fact, he is a dead person. We don't know whereabouts of his great soul after his death in 1883. These facts should be always kept in mind. If someone offers prayer or 'Arti' to his picture, it is nothing but blind idolatry.

If we are not prepared to take precautions as mentioned above, it would be better not to place any picture of Maharshi in the Arya Samaj.

However, fortunately because of the high level of awareness amongst the members of Arya Samaj about idolatry, and the powerful lessons of Satyarth-Prakash, so far we don't see any where in the Arya Samaj that Maharshi's picture is really worshipped just like idols in the temples. The Arya Samaj has grown as a mature sensible society and deserves congratulations for the same.

Swami (Dr) Satya Prakash Saraswati, a learned Sannyasi of the Arya Samaj used to say that the Arya Samaj has adopted the 'Jayakaras" of Sri Ram and Sri Krishna from Pauranic groups just to please and allure them towards Arya Samaj. This should be stopped and rationalized. If in presence of Maharshi Dayananda, had someone dared to abruptly shout "Maharshi Dayananda ki Jay", Maharshi would have surely fired him like anything!

I request scholars of Arya Samaj to throw some light on these issues and guide us further.

– भावेश मेरजा
8–17 टाउनशिप, पो.–नर्मदानगर,
जिला–भरूच, गुजरात–392015
e-mail : bcmerja@gnfc.in

सत्ता की भाषा

– अरमान

पिछले दिनों जामिया मिल्लिया इस्लामिया में दो घटनाएं मुझे बहुत ही महत्त्वपूर्ण लगीं। पहली का संबंध जामिया के स्थापना दिवस से है। यूपीए सरकार के मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया आए हुए थे। चर्चा का विषय था– 'इक्कीसवीं सदी में भारत और युवाओं का भविष्य'। सभागार खचाखच भरा हुआ था। चर्चा की भाषा अंग्रेजी थी, जिसे सभागार में मौजूद ज्यादातर श्रोता नहीं समझ रहे थे, लेकिन समझने का ढोंग कर रहे थे। मुख्य अतिथि का वक्तव्य खत्म होते ही सवाल आमंत्रित किया गया। एक छात्र ने चर्चा के माध्यम के तौर पर अंग्रेजी भाषा पर ही सवाल खड़ा कर दिया।

उसका कहना था– 'आजादी के तुरंत बाद बापू ने एक पत्रकार को कहा था कि 'कह दो दुनिया को कि गांधी को अंग्रेजी नहीं आती'। गुलामी और आयातित भाषा के माध्यम से कोई देश कब तक बेहतर और गौरवमय भविष्य की कल्पना कर सकता है?मंत्रीजी, आप हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में भी अपनी बात कह सकते थे। लेकिन आपने अंग्रेजी में अपनी बात रखी। ऐसा क्यों होता है कि दुनिया के दूसरे देशों के राष्ट्राध्यक्ष अपनी जुबान में अपनी बात कहते हैं, जबकि अपने देश के राजनेता औपनिवेशिक भाषा की शरण में चले जाते हैं?' मंत्रीजी मंच पर थे, तो कुछ न कुछ बोलना ही था। उन्होंने हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के विकास की बात कही। सभागार में बैठे लोगों ने उस छात्र की तालियों के साथ हौसला–आफजाई की।

दूसरी घटना हाल में संपन्न हुए विश्वविद्यालय क्रिकेट चौंपियनशिप के दौरान हुई। इसमें जामिया की टीम भी भाग ले रही थी। कप्तान प्रवीण यादव के सामने जब संवाददाता पहुंचता था तो हिंदी में सवाल करता था, वहीं दूसरी टीम के कप्तान और खिलाड़ियों से अंग्रेजी में। मैं भी दर्शकों के बीच मौजूद था। ज्यादातर दर्शक प्रवीण यादव को अंग्रजी न बोलने के कारण गालियों से नवाज रहे थे। उनमें कई दर्शकों से मेरी बकझक हो गई। ज्यादातर का मानना था कि प्रवीण का अंग्रेजी न बोलना जामिया के लिए शर्म की बात है। लेकिन उन्हीं में से एक ने कहा कि अपनी भाषा में बात करने में कैसी शर्म! पास बैठे बाकी दर्शकों ने उसे चुप करा दिया।

ये दोनों घटनाएं साधारण–सी लगती हैं, लेकिन कई गंभीर प्रश्न उठाती हैं। अगर इनके पीछे छिपे राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारणों की पड़ताल करें तो इनके केंद्र में हमारी औपनिवेशिक विरासत नजर आएगी। इसके कारण हम सांस्कृतिक रूप से आला दरजे की मानसिक गुलामी के शिकार हैं। किशन पटनायक अपनी पुस्तक 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया' में इसे 'गुलाम दिमाग का छेद' कहते थे। उनका मानना था कि लंबे समय तक गुलाम रहे देशों के नागरिकों की मानसिकता गुलामी की हो जाती है, जो राजनीतिक गुलामी से ज्यादा खतरनाक होती है। जामिया की दोनों घटनाएं इसी प्रकार की गुलामी को दर्शाती हैं, जब अपने ही देश के नागरिक अपनी भाषा–संस्कृति से घृणा करने लगते हैं या देश के राजनेता राष्ट्रीय गौरव के मौके पर भी अपनी भाषा के बजाय विदेशी भाषा में बात करते हैं। देश की संसद में ज्यादातर बहसें विदेशी भाषा में होती हैं। अदालत की भाषा आयातित है। वहीं संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अनिवार्य अंग्रेजी थोपने का प्रयास किया जाता है, ताकि गैर–अंग्रेजी भारतीय भाषाओं के विद्यार्थियों को वर्तमान औपनिवेशिक प्रशासनिक ढांचे से दूर रखा जा सके और सत्ता की गोपनीयता बनी रहे।

अंग्रेजी के महिमामंडन का परिणाम यह हुआ है कि आम आदमी अंग्रेजी भाषा और उसकी जीवनशैली को ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग समझने लगा है। गांव–गांव में कुकुरमुत्ते की तरह खुलने वाले कथित अंग्रेजी माध्यम स्कूल इसके उदाहरण हैं। समाज में होने वाले ये शैक्षणिक सांस्कृतिक बदलाव एक विशेष मानसिकता को दर्शाते हैं। यह स्थिति समाज, भाषा और ज्ञान के विशेष अंतर्संबंध पर नए सिरे से सोचने को मजबूर करती है।

रघुवीर सहाय ने लिखा है– 'अंग्रेजों ने अंग्रेजी पढ़ कर प्रजा बनाई, अंग्रेजी पढ़ कर अब हम राजा बना रहे हैं।' दरअसल, प्रजा और राजा के बीच होने वाले भाषा के खेल ने नई दिशा ले ली है। अब हमारा अंग्रेजीदां लोकतांत्रिक राजा वास्तविकता और सिद्धांत के बीच की दूरी को हमेशा बनाए रखना चाहता है। भाषाविद् यह कहते रहे हैं कि विदेशी भाषाओं में कोई मौलिक चिंतन स्वाभाविक रूप से नहीं हो सकता, दबाव में खानापूर्ति हो सकती है। भारतीय विश्वविद्यालय और उनके काम इसके उदाहरण हैं। प्रश्न है कि दुनिया के दो सौ सर्वोच्च विश्वविद्यालयों की सूची में भारत का एक भी विश्वविद्यालय क्यों नहीं आता?

इस तथ्य का भाषायी नजरिए से समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के बजाय एक विदेशी भाषा को जबर्दस्ती थोपा जा रहा है। इससे आखिरकार भारतीय प्रतिभाएं कुंद हो रही हैं। न जाने यह बात कब समझ में आएगी?

– जनसत्ता 15 जुलाई, 2013 से साभार

विश्व भाषा का सपना

– कृष्णदत्त पालीवाल

औपनिवेशिक गुलामी की मानसिकता अंग्रेजी के वर्चस्व को ढोती रहती है। लेकिन हमारी अपनी अस्मिता भारतीय भाषाओं, खासकर हिन्दी की ओर उन्मुख रही है। आज हिन्दी का संसार बाजारवाद, व्यापार, तकनीकी क्रांति, विज्ञापनवाद के कारण मीडिया क्रांति के साथ बढ़ रहा है। हिन्दी आज विश्वभाषा बनने की तैयारी में है।

यहाँ मूल प्रश्न यह उठता है कि विश्वभाषा किसे कहते हैं और कोई भी भाषा विश्वभाषा कहलाने की कब अधिकारी होती है। वह किस तरह से विश्वभाषा बनती है। एक मानदंड यह सुझाया जाता रहा है कि संयुक्त राष्ट्र में मान्य भाषाओं को हम विश्वभाषा कह सकते हैं या कहना चाहिए लेकिन समस्या ऐसा मानने से हल नहीं हो जाती। हल होना तो क्या, वह और उलझ जाती है। इसलिए उलझ जाती है कि जापानी, जर्मन, लैटिन आदि भाषाएँ एक समय विश्वभाषा बनने की तमाम संभावनाओं से सम्पन्न थी। लेकिन ऐसी राजनीति चली कि इन्हें संयुक्त राष्ट्र में मान्यता नहीं मिली। क्यों नहीं मिली?इसका कारण यह बताया जाता है कि ये भाषाएँ पराजित राष्ट्रों की भाषाएँ थीं। ये देश दूसरे विश्वयुद्ध में पराजित हुए और ध्वस्त किए गए।

हिन्दी को लेकर चौतरफा बहस छिड़ी तो यह प्रश्न भी जोर–शोर से उठाया गया कि सरकार की मंशा भारतीय भाषाओं को धता बताने की है। सरकार हिन्दी को भारत में चलाना ही नहीं चाहती। अगर चाहती तो छह दशक से अधिक समय हो गया भारत को आजाद हुए एक भी कानून भारत की राजभाषा में पारित क्यों नहीं हुआ?क्या कोई भी कानून हिन्दी में मौलिक ढंग से लिखा गया है?सभी कानून अंग्रेजी में लिखे जाते हैं। फिर क्या होता है?उनका भ्रष्ट अनुवाद हिन्दी में। कोई भी ऐसा नहीं, जो सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी में बहस कर सके। यहाँ हिन्दी में बहस असंभव है। अपनी बात स्वभाषा में कहें तो उसका अनुवाद किया जाता है। स्वदेश में स्वभाषा की ऐसी छीछालेदर हमारे स्वाभिमान पर चोट है। भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, निराला, अज्ञेय का अपमान है।

शुरू में ही संयुक्त राष्ट्र में पाँच भाषाओं को मान्यता मिली जो अमेरिका, ब्रिटेन, रूस फ्रांस और चीन की थीं। ये सभी इन विजयी राष्ट्रों की राजभाषाएँ थीं। द्वितीय विश्वयुद्ध में स्पेनिश भाषा बोलने वाले अमेरिका के साथ थे। इसलिए स्पेनिश को भी उछाला गया और उसे मान्यता मिल गई। शक्ति और पैसे का डार्विनवाद संसार में पनपा तो अरब देशों की भाषाओं को भी मान्यता दे दी गई। बीस–बाईस अरब देश हैं और उनका धनबल वाला रुतबा है।

बहस इस बात को लेकर छिड़नी ही थी कि जिन भाषाओं को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता मिल गई है वे भाषाएँ ही क्या विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषाएँ हैं?जिन्हें मान्यता नहीं मिली, क्या वे कमतर और असमर्थ भाषाएँ हैं?शक्ति और धनबल अगर श्रेष्ठता का आधार है तो प्रश्न भाषा की श्रेष्ठता का नहीं, खास भाषा बोलने वालों की श्रेष्ठता का है। जिनके पास शक्ति थी उनकी भाषा को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता मिल गई। लेकिन हम तो साम्राज्यवादी लूट के शिकार थे। सन् 1945 में जब संयुक्त राष्ट्र बना, हम आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे। ऐसी गुलाम स्थिति में हमारी भाषा को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता कैसे मिलती। 'पराधीन सपनेहु सुख नाही' का अर्थ हम हिन्दी भाषी जैसा जानते हैं वैसा अन्य कोई कैसे जान सकता है। गुलाम भारत में हमें कभी हिन्दी–उर्दू के नाम पर लड़ाया जाता था, कभी देवनागरी और रोमन का झगड़ा कर दिया जाता था। इसलिए हिन्दी में विश्वभाषा होने की संभावनाएँ होने पर भी बात झगड़े में रह जाती थीं।

आखिरकार हिन्दी को विश्वभाषा बनाने का विचार दबा नहीं रह सका। बहुत प्रतीक्षा के बाद 2003 में सूरीनाम में सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में हिन्दी भाषा के प्रेमी जागे और वहाँ यह प्रस्ताव पारित किया गया कि हिन्दी को विश्वभाषा का दर्जा मिलना चाहिए। मुझे याद है कि वेदप्रताप वैदिक ने विश्वभाषा हिन्दी के प्रस्ताव को लेकर सभी दलों के सांसदों से हस्ताक्षर करवाकर अभियान चलाया था। दरअसल, हिन्दी को विश्वभाषा का स्थान प्राप्त हो यह प्रस्ताव सन् 1975 में ही नागपुर विश्व हिन्दी सम्मेलन में पारित किया गया था। लेकिन उस पर अमल नहीं हो सका। देश आपातकाल के संकट में पड़ गया। हर तरफ पकड़–धकड़ मच गई। बहुतों ने जेल काटी। इस समय अज्ञेय जी ने चुप्पी की दहाड़ का अर्थ समझाया।

आपातकाल समाप्त होने के बाद विश्वभाषा हिन्दी का प्रश्न फिर उठा। यहाँ के अंगरेजीदाँ बहुत से लोग हिन्दी के विरोध में डट गए। यह प्रश्न इन गुलाम मानसिकता के बौद्धिकों ने ही उठाया कि हिन्दी विश्वभाषा कैसे हो सकती है, जबकि इस देश में ही सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं है। हिन्दी बोलने वाले भले जनसंख्या में ज्यादा हैं लेकिन हिन्दी अशिक्षितों, कम पढ़े–लिखे और पिछड़े लोगों की भाषा है।

कुछ लोगों ने इस दौर में भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा का आन्दोलन चलाने वाले डॉ. राममनोहर लोहिया को भी पानी पी–पीकर कोसा और कहा कि अंग्रेजी तो ज्ञान–विज्ञान की भाषा है। इस तर्क के सहारे मैकालेवाद हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की छाती पर चढ़ बैठा। यह भी कहा गया कि हमारा नवजागरण अंग्रेजी की देन है – अंगरेज न आते तो हम कूपमंडूक रह जाते।

खास अंदाज में यह भी पूछा गया कि क्या सचमुच हिन्दी राजभाषा या राष्ट्रभाषा है?हिन्दी को संवैधानिक राजभाषा कहना मृगतृष्णा है क्योंकि व्यवहार में तो भारत सरकार का सारा कामकाज अंग्रेजी में ही होता है। हिन्दी में तो उसे खाँसी–जुकाम तक नहीं होता। भारत में ब्रिटेनवाद ऐसा हावी है कि पानी ब्रिटेन में बरसता है और छाता लगाकर हम भारत में चलते हैं। हम अनुकरणवाद के शिकार हैं। फिर संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को ले जाने का क्या अर्थ?

हिन्दी को लेकर चौतरफा बहस छिड़ी तो यह प्रश्न भी जोर–शोर से उठाया गया कि सरकार की मंशा भारतीय भाषाओं को धता बताने की है। सरकार हिन्दी को भारत में चलाना ही नहीं चाहती। अगर चाहती तो छह दशक से अधिक समय हो गया भारत को आजाद हुए एक भी कानून भारत की राजभाषा में पारित क्यों नहीं हुआ?क्या कोई भी कानून हिन्दी में मौलिक ढंग से लिखा गया है?सभी कानून अंग्रेजी में लिखे जाते हैं। फिर क्या होता है?उनका भ्रष्ट अनुवाद हिन्दी में। कोई भी ऐसा नहीं, जो सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी में बहस कर सके। यहाँ हिन्दी में बहस असंभव है। अपनी बात स्वभाषा में कहें तो उसका अनुवाद किया जाता है। स्वदेश में स्वभाषा की ऐसी छीछालेदर हमारे स्वाभिमान पर चोट है। भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, निराला, अज्ञेय का अपमान है।

हम हिन्दी में निष्ठा से मौलिक और सरकारी काम करें तो हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में कौन रोक सकता है?हम हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बना दें और हिन्दी में कार्य न करें तो दुनिया उसे विश्वभाषा कैसे मान लेगी?हमारी हालत वही होगी जो अरबी की हुई। अरबी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा मान लेने पर भी उसे अरब राष्ट्रों ने ही विश्वभाषा नहीं माना। इसलिए हिन्दी को यदि विश्वभाषा बनाना है तो उसकी चहुँमुखी प्रगति के लिए संकल्प लेकर प्रयत्न करना है।

हिन्दी में विश्वभाषा, संयुक्त राष्ट्र की मान्यता प्राप्त भाषा बनने की क्षमता है, केवल हमारे संकल्प की कमी है। हम तो अभी मैथिली, भोजपुरी, बुंदेली, राजस्थानी, ब्रज आदि बोलियों की राजनीति में पड़कर भस्मासुर बनने की तैयारी कर रहे हैं। हिन्दी को अगर संयुक्त राष्ट्र में लाना है और विश्वभाषा बनाना हो तो बोलियों की यह राजनीति बंद करनी होगी।

बोलियों की राजनीति की गई तो हिन्दी का बहुत अहित होगा। हिन्दी की अटूट ताकत को लकवा मार जायेगा और क्षेत्रवाद के साथ अलगाववाद पनपेगा। अगर हिन्दी की अखंड ताकत से संयुक्त राष्ट्र में उसे स्थान मिल गया तो वे नौकरशाह जो अंग्रेजी के दम पर अफसरी करते हैं, उन्हें हिन्दी में काम करना होगा। अगर ऐसा हुआ तो इसमें रघुवीर सहाय के हरचरना की जीत होगी और सत्ता में अंग्रेजी तानाशाही की पराजय। हिन्दी की यह जीत दलित चेतना और दलित आन्दोलन की भी जीत होगी। अपने जन–बल से दलित ही हिन्दी को आगे लायेंगे, वह प्रभुत्वशाली वर्ग नहीं, जो अंग्रेजी को कायम किए हुए और मलाईदार पदों पर काबिज हैं। हमें दलित वर्ग की ताकत से ही पहचानना होगा कि हिन्दी हमारी संस्कृतिक अस्मिता का पाठ है। यह पाठ हमें कई कोणों से पढ़ना होगा। ताकि हम हिन्दी की अस्मिता को फिर रच सके। उसकी सर्जनात्मकता को और निखार सकें।

हिन्दी को प्रथम स्तर पर लाना है तभी अनुवादजीवी होने से उसे मुक्ति मिलेगी और हम राष्ट्रीय स्वाभिमान को धारण कर सकेंगे। क्या लज्जास्पद बात नहीं कि हमारे नेताओं के भाषण संयुक्त राष्ट्र में अंग्रेजी में पढ़े जायें और साथ में पढ़ा जाए उनका हिन्दी अनुवाद। हिन्दी न जानने वाले मंत्री और प्रधानमंत्री को भी अपना भाषण अपनी मातृभाषा में देना चाहिए। इसी में गौरव है कि वह अपना अनुवाद संयुक्त राष्ट्र में खुद पढ़ें।

हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में प्रतिष्ठित करने से कई लाभ होंगे। पहला तो यही होगा कि भारतीय भाषाओं का हौसला बढ़ेगा। बड़ी बहन हिन्दी अपनी सभी छोटी बहनों को आगे बढ़ायेगी। राष्ट्र की एकता–अखंडता मजबूत होगी। हम संयुक्त राष्ट्र में भारत की चौबीस भाषाओं को नहीं ला सकते, इसलिए हमें सोचना होगा कि हिन्दी ही वह भाषा है जो पूरे देश का अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर सकती है। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में प्रतिष्ठित करने का एक अर्थ यह भी होगा कि मारीशस, फीजी, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गयाना–दुनिया के लगभग आधा दर्जन देश प्रतिष्ठित होंगे।

इन देशों में हिन्दी भाषी लोगों की जनसंख्या काफी है। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में प्रतिष्ठित न कर पाने के कारण ही आज इन देशों में हिन्दी का क्षय हो रहा है। भारतवंशी इन देशों में हिन्दी को बचाना होगा। समय आ गया है कि हम मिलकर ऐसा मजबूत कदम उठाएँ कि हिन्दी न तो भारत में अंग्रेजी की दासी रहे न वहाँ जहाँ भारतवंशी जाकर बसे हैं। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में सम्मान मिलेगा तो हिन्दी को नया जीवन मिलेगा। हिन्दी भाषी अपनी जड़ों से जुड़ेगा।

हमें पता होना चाहिए कि पूरी खाड़ी में आज पैंतीस लाख से अधिक भारतीय रहते हैं। वे सभी जीवन व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इधर पड़ोस के देशों में बीस–पच्चीस करोड़ लोग ऐसे हैं जो हिन्दी समझते हैं पर बोलेन में कठिनाई महसूस करते हैं। संसार बहुत बड़ा है और इसमें लगभग पचास–साठ देशों में भारतीय रहते हैं। उनमें से लगभग तीन करोड़ ऐसे भारतीय हैं जो हिन्दी बोलते–समझते हैं भारत से प्रेम के कारण वे अपने बच्चों को हिन्दी सिखाते हैं। इसके पीछे अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा भी क्या बलवती नहीं है?

इस तरह अनेक भाषाओं को बोलने वालों के लिए हिन्दी जोड़ने वाली भाषा है। साथ ही हिन्दी एक शक्तिशाली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है – जरूरत केवल उसे संयुक्त राष्ट्र में प्रतिष्ठित करने की है। ऐसा होने पर करोड़ों प्रवासी भारतीयों का सीना गर्व से फूल उठेगा क्योंकि भाषा ही अस्मिता और स्वाभिमान की वाहक होती है। भाषा में स्वाभिमान न होने पर वह मुरझाती है और आत्मधिक्कार का शिकार हो जाती है। उसे बोलने वाले शडिमोरलाइज हो जाते हैं। हम सभी हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में प्रतिष्ठित करेंगे तो हिन्दी को विश्वभाषा का गौरव दिलाने का दिन कोई रोक नहीं सकेगा। साथ ही एशिया एक नए जागरण से विश्व में उठ खड़ा होगा और वैश्वीकरण में हमारी हिन्दी की हिस्सेदारी होगी। ग्लोबल कल्चर से हिन्दी का विजन बढ़ेगा।

हमारी लिपि (देवनागरी) वैज्ञानिक लिपि है और इसे सीखना सरल है। यह चीनी की तरह चित्रलिपि नहीं है कि अक्षरों को सीखने में ही साल लग जाएं। हिन्दी की लिपि देवनागरी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। कम्प्यूटर में संयुक्त हिन्दी लिपि की वैज्ञानिकता सिद्ध है। अगर हम प्रयत्न करें। तुर्की को रोमन लिपि स्वीकार करना पड़ी। इण्डोनेशिया को या भाषा इंडोनेशिया को रोमन लिपि स्वीकार करनी पड़ी। स्वयं मंगोल भाषा को रूसी लिपि के सामने घुटने टेकने पड़े। अगर हिन्दी विश्वभाषा हो जाती है तो संसार के अनेक देश देवनागरी लिपि को स्वीकार कर लेंगे। देवनागरी के अन्तरराष्ट्रीय लिपि बनते ही विश्व का इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र और राजनीति बदल जायेगी। हिन्दी को रोमन लिपि में लिखने का झगड़ा ही खत्म हो जायेगा और तमाम भाषाओं के शब्द हिन्दी में आकर हँस पड़ेंगे।

समाजशास्त्रियों का कहना है कि हिन्दी बोलने वालों की संख्या आज विश्व में सर्वाधिक है। पहले चीनी यानी मंडारिन बोलने वाले जनसंख्या की दृष्टि से आगे थे, अब हिन्दी बोलने वाले। सभी चीनी मंडारिन नहीं बोलते। विश्व के स्रोत ग्रन्थ हिसाब लगाकर बताते हैं कि चीनी भाषियों की संख्या लगभग सत्तर करोड़ हैं। जबकि पूरी दुनिया में हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या एक अरब से भी ज्यादा हैं। अंग्रेजी साढ़े चार देशों की भाषा है और मातृभाषा के तौर पर उसे बोलने वालों की संख्या पैंतीस करोड़ से ज्यादा नहीं है। फिर भी आज अंग्रेजी विश्वभाषा है। यह हमारे शासकों प्रभुओं की भाषा है। महाशक्ति की धौंसभरी भाषा है। हिन्दी इस भाषा की गुलाम है।

इस गुलामी से मुक्त कराने के लिए महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, राम मनोहर लोहिया और पुरुषोत्तमदास टण्डन बेचैन रहे क्योंकि इनकी निगाह में भारत के लोकतंत्र की अपनी भाषा होनी चाहिए। फिर हिन्दी के पास अपार अथाह शब्द

शेष पृष्ठ 7 पर

अंग्रेजी के एक-एक शब्द के लिए हिन्दी के पास दस-दस पर्याय हैं। इन पर्यायों में हमारे पुरखों के अनुभव ज्ञान का खजाना खनकता है। करोड़ों लोगों के द्वारा प्रयोग में लाने से हिन्दी में यह ताकत आई है। मानवीय भावों, विभावों, कारकों, रूपकों के लिए हिन्दी की सामर्थ्य और सूक्ष्मता देखते ही बनती है। हिन्दी की वाग्देवी ने ऐसे वाक्द्वार निर्मित किए हैं कि उनमें संस्कृत की अपार संपदा समा गई है। व्याकरण, दर्शन, धर्म, अर्थ-मीमांसा के विमर्श हजारों सालों से प्रवाहमान है। विचार की एक परंपरा न होकर अनेक परम्पराएं हैं।

शिक्षा की अलख जगा रही रजिया को पहला मलाला अवार्ड

– आशुतोष झा

नई दिल्ली : नन्हे व कोमल हाथों से मेरठ की रजिया ने ऐसे इस्पाती हस्ताक्षर किए कि उसे संयुक्त राष्ट्र ने शिक्षा जगत के सुल्तान का तमगा दे दिया। रजिया और उस जैसे न जाने कितने बच्चों की नाजुक हथेलियां फुटबाल को आकार देने में लहूलुहान होती थीं। अच्छी फुटबाल बनाने में कई मासूमों की अंगुलियां टेढ़ी हो गई। मगर रजिया ने बर्बाद होते इस बचपन को नियति मानने से इन्कार कर दिया। जीवन ने उसे एक मौका दिया तो अपने जज्बे से उसने न सिर्फ अपना जीवन रोशन किया बल्कि उन दर्जनों बच्चों की अंगुलियों में कलम पकड़ा दी जो कुछ वक्त बाद शायद कलम थामने के लायक भी न बचते।

रजिया के इस जीवट को संयुक्त राष्ट्र ने भी माना और अब वह भारत की 'मलाला' है। शिक्षा की खातिर तालिबान के सामने खड़ी होने वाली पाकिस्तान की बहादुर लड़की मलाला यूसुफजई शुक्रवार यानी 12 जुलाई को 16 साल की हो रही है। संयुक्त राष्ट्र में 'मलाला–डे' के अवसर पर शामिल होने के लिए रजिया न्यूयॉर्क नहीं जा पाईगी। लेकिन, पहला मलाला अवार्ड भारत की 15 वर्षीय रजिया को ही दिया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के विशेष राजदूत गार्डन ब्राउन ने रजिया को पत्र लिखकर बताया है कि वह अपनी जुबानी पूरे विश्व को रजिया की कहानी सुनाएंगे।

बदलाव की यह कहानी तब शुरू हुई जब रजिया महज पांच साल की थी। मेरठ के नांगली कुंबा गांव में बचपन फुटबाल की सिलाई कर परिवार को सहारा देने में जुटा हुआ था। फुटबाल की सिलाई में बच्चों को इसलिए लगाया जाता है क्योंकि उनकी नाजुक अंगुलियां जितनी बारीक सिलाई करती हैं, उतनी बड़े नहीं कर पाते। लेकिन, कई मामलों में देखा गया है कि कुछ साल तक काम करते–करते बच्चों की अंगुलियां टेढ़ी हो जाती हैं। गैर सरकारी संस्था 'बचपन बचाओ आंदोलन' ने रजिया का बचपन आजाद कराने की कोशिश की। उसके परिजनों से बात की और उन्हें समझाया, जिससे रजिया मजदूरी से आजाद हो गई।

शिक्षा की रोशनी और अपने जज्बे से उसने आस–पास के गांवों तक रोशनी फैलाई। अब तक उसने 46 बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त कराकर स्कूल में दाखिला दिलाया है। उसने खुद कुराली के एसडीआर स्कूल से 11वीं पास कर ली है। आसपास के कई गांव अब बाल मित्र ग्राम हो गए हैं। यानी अब वहां बच्चों से मजदूरी नहीं कराई जाती। आत्मविश्वास से भरी रजिया ने 'दैनिक जागरण' से बातचीत में कहा कि वह आगे भी समाज सेवा ही करना चाहती है। उसे अच्छा लगता है कि समाज में बहुत कुछ बदल रहा है। उसने पास के स्कूल में पानी पीने की व्यवस्था कराई, डीएम से मिलकर लड़कियों के लिए अलग से शौचालय की व्यवस्था करवाई और अपने गांव को सुरक्षित करने के लिए सबको साथ लेकर दीवार खड़ी करवा दी।

– जागरण से साभार

महिलाओं, शिक्षा और बदलाव से डरते हैं कट्टरपंथी

संयुक्त राष्ट्र/पेशावर (एजेंसी)। पाकिस्तान में तालिबान की धमकी की परवाह न करते हुए लड़कियों की शिक्षा की पैरोकारी करने वाली मलाला यूसुफजई ने शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र से कहा कि कट्टरपंथी महिलाओं को शिक्षा और बदलाव से डरते हैं। वह आतंकवादी खतरे के सामने खामोश नहीं होंगी।

मलाला शुक्रवार को 16 साल की हो गईं। उनके जन्मदिन को संयुक्त राष्ट्र ने "मलाला दिवस" के रूप में मनाने का फेसला किया है। पिछले साल तालिबान के हमले में घायल हुईं मलाला ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए कहा, "उन्होंने सोचा था कि उनकी गोली हमें खामोश कर देगी, लेकिन वे नाकाम रहे।" उन्होंने दुनिया भर की लड़कियों से अपील की, 'चलो किताबें और कलम उठाओ। ये हमारे सबसे ताकतवर हथियार हैं। एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब और एक कलम ही दुनिया को बदल सकते हैं। शिक्षा ही एकमात्र हल है।'

गृह जिले के लोगों को याद नहीं आया मलाला का संघर्ष : पाकिस्तान में तालिबान की धमकी से बेपरवाह होकर लड़कियों की शिक्षा की पैरोकारी करने वाली मलाला यूसुफजई के जन्मदिवस के मौके पर शुक्रवार को पूरी दुनिया में "मलाला दिवस" मनाया गया, हालांकि इस दिन उनके गृह जिले में उनके साहस और संघर्ष को लगभग भुला दिया गया।

मलाला का दुनियाभर की लड़कियों से आह्वान

चलो किताबें और कलम उठाओ। ये हमारे सबसे ताकतवर हथियार हैं। एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब और एक कलम ही दुनिया को बदल सकते हैं। शिक्षा ही एकमात्र हल है मलाला का दुनियाभर की लड़कियों से आह्वान।

मलाला दिवस के मौके पर पाकिस्तान में कई स्थानों पर संगोष्ठियों, सम्मेलनों और समारोहों का आयोजन किया गया। इनमें विद्वानों, शिक्षाविदों और विश्लेषकों ने हिस्सा लिया तथा तालिबान के खिलाफ उनके संघर्ष का स्मरण किया। मलाला के गृहनगर स्वात में इस दिन कुछ खास नहीं हुआ। स्वात में ही तालिबान ने पिछले साल मलाला पर हमला किया था। इस हमले के बाद यहां स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या में बढ़ोतरी देखी गई है। स्वात खैबर पख्तूनख्वाह में आता है। यहां की प्रांतीय सरकार इमरान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ की है। प्रांतीय सरकार ने मलाला दिवस के मौके पर स्वात में कोई खास कार्यक्र म आयोजित नहीं किया। स्वात से सांसद मुराद सईद ने कहा कि बाल अधिकारों के लिए मलाला की सेवा को कभी नहीं भूला जा सकता।

बिना दहेज शादी कर आइएएस ने पूरा किया मां का सपना

जागरण संवाददाता, एटा। न बैंड–बाजे थे और ना ही विशेष साज–सज्जा। लजीज व्यंजनों की दावत नहीं और गहनों की चमक भी बहुत दूर। वहां थे सादगी भरे अंदाज में दूल्हा–दुल्हन। दो घंटे में रिंग सेरेमनी से लेकर फेरों तक शादी की सारी रस्में पूरी की गई। दरअसल, दहेज रहित शादी में दूल्हे का सेहरा रांची के असिस्टेंट कलेक्टर भुवनेश प्रताप सिंह के सिर पर था और दुल्हन के लिबास में थीं कानपुर की असिस्टेंट इनकम टैक्स कमिश्नर भावना गुलाटी। दूल्हे ने बिना दहेज की शादी अपनी मां का सपना पूरा करने के लिए की।

दोनों अधिकारियों की शादी रविवार को उत्तर प्रदेश के एटा जिले के गांव बहादुर नगर में भोले बाबा के विश्व हरि साकार धाम में हुई। आइएएस भुवनेश प्रताप सिंह आगरा में संजय प्लेस के रहने वाले हैं। 16 जून, 2012 को रांची में वह असिस्टेंट कलेक्टर नियुक्त हुए। दुल्हन भावना गुलाटी मूलरूप से लखनऊ की रहने वाली हैं। शादी दहेज रहित तो थी ही, इसके अलावा समय और पैसे की बचत का भी संदेश देने की कोशिश की गई।

आमतौर पर होने वाली शादियों में वैवाहिक कार्यक्रम रातभर चलते हैं। यहां समय की बचत करते हुए दो घंटे में ही रिंग सेरेमनी से लेकर जयमाला, सात फेरे और कन्यादान की रस्में पूरी कर ली गई। दूल्हे की मां शांति देवी ने कहा कि लोग तड़क–भड़क में लाखों रुपये खर्च कर देते हैं। इस पैसे को बचाकर अच्छी जगह उपयोग किया जा सकता है। रस्में सादे समारोह में पूरी हो सकती हैं। दोनों ने शादी परिवार वालों की इच्छा पर की है। दोनों परिवार के लोग उच्च पदों पर हैं।

– जागरण से साभार

विकास बना विनाश

– शमशेर सिंह बिष्ट

भू–वैज्ञानिकों के मुताबिक हिमालय का निर्माण यूरेशियन और एशियन प्लेट्स की आपसी टक्कर का नतीजा है। अरबों साल पहले गोंडवानालैंड (वर्तमान अफ्रीका और अंटार्कटिका) से टूटकर आए भारतीय उपमहाद्वीप का ऊपरी हिस्सा ही हिमालय है। हिमालय अब तक मूल स्थान से दो हजार किलोमीटर की यात्रा कर चुका है और अभी भी दो सेंटीमीटर प्रति वर्ष की दर से चीन की तरफ धंस रहा है। इस भूगर्भीय हलचल के कारण हिमालय क्षेत्र में जबर्दस्त तनाव रहता है। इस तनाव को कम करने का उपाय भी प्रकृति के ही पास है।

बार–बार 6 रिक्टर स्केल का भूकम्प आता रहे तो यह भूगर्भीय हलचल कम हो जाती है और इससे अधिक तीव्र स्तर का भूकम्प आने की आशंका कम हो जाती है। पिछले सौ वर्ष से यहाँ आठ या उससे अधिक शक्ति का भूकम्प नहीं आया है, इसलिए ऐसा भूकम्प आने की आशंका बहुत अधिक है। पूरा उत्तराखंड ही भूकम्प के मामले में संवेदनशील है। यहाँ के नौ जिले–पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, बागेश्वर, चम्पावत, चमोली, उत्तरकाशी, पौड़ी, टिहरी और रूद्रप्रयाग जोन पांच में और शेष चार, देहरादून, हरिद्वार, उधमसिंह नगर और नैनीताल के कुछ हिस्से जोन चार में आते हैं। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के भू–वैज्ञानिकों ने 2000 से 2009 के बीच पाँच हजार से अधिक छोटे और मझोले (1 से 4 तक की तीव्रता के) झटके रिकॉर्ड किए।

याद रहे कि विश्व में जापान भूकम्प की नजर से सबसे अधिक संवेदनशील देश हैं। लेकिन लगातार भूकम्प झेलने के बावजूद जापान ने कभी आपदा का रोना नहीं रोया। सुनामी से हुई तबाही के बावजूद वह तत्काल उठ कर खड़ा हो गया। इसका कारण यह है कि उसने प्रकृति से सामंजस्य बिठाकर विपदाओं को कम करने का प्रयास किया है। लेकिन भारत में और उत्तराखण्ड में इसके विपरीत होता रहा है। उत्तराखंड राज्य आंदोलन के पीछे अपने प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की अवधारणा थी। मगर इस प्रदेश का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में आ गया, जिन्होंने प्रकृति की लूट को विकास का मूल मंत्र मान लिया। यहाँ तक कि भूमि कानूनों तक में संशोधन नहीं किया गया। इसके उलट ऐसे कानून बना दिए, जिससे जमीनें यहाँ के स्थानीय निवासियों के हाथ से निकलती रहें।

इस तथाकथित विकास के अहंकार ने ही आज उत्तराखण्ड में जबर्दस्त तबाही मचाई है। पूर्वजों का अनुभव था कि अहंकारशून्यता से ही जीवन की मूलभूत समस्याएँ हल हो सकती हैं। प्रकृति आत्मीयता की पर्याय है और आत्मीयता सब समस्याओं का हल कर सकती है।। उत्तराखण्ड में प्रकृति से आत्मीयता का प्रतीक 'चिपको' आन्दोलन था, जिसने पूरे विश्व में जंगलों के प्रति चेतना पैदा की। हालांकि उस वक्त भी अहंकारी वैज्ञानिक, ठेकेदार और राजनेता पेड़ों के अनियंत्रित कटान को विकास का पैमाना मानते थे। उसी तरह आज उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा जैसे लोग यहाँ की नदियों में बाँध बनाने को ही विकास का पैमाना मानते हैं। इस विकास ने न सिर्फ हजारों लोगों की जानें लीं, बल्कि उत्तराखण्ड की पूरी अर्थव्यवस्था ही चौपट हो गई।

कथा है कि पार्वती को केदारनाथ मंदिर का महत्त्व बताते हुए शिव जी कहते हैं – केदारनाथ मुझे अत्यंत प्रिय हैं। .... केदारनाथ ने मुझे इतना मोहित किया कि मैं इसे न कभी छोड़ूँगा और न कभी भूलूँगा। यह मेरे लिए अत्यंत पवित्र है। यहाँ जो भी मृत्यु को प्राप्त होता है, वह शिव में विलीन हो जाता है।' उसी केदारनाथ में आज मृत्यु का सन्नाटा पसरा है। मानवीय लालच से पैदा हुई तबाही ने लोगों की आस्था पर भी कुठाराघात किया। केदारनाथ का प्राकृतिक सौंदर्य स्थाई रहे, इसके लिए हमारे पूर्वजों ने इसे धार्मिक आस्थाओं के साथ जोड़ा। एक प्रचलित कथा के मुताबिक एक बार एक शिकारी हिमालय में भारी संख्या में हिरणों का शिकार करते हुए केदारनाथ पहुँचा, जहाँ उसने अनेक लोगों को ध्यान में लिप्त पाया। वह थोड़ी दूर से उन लोगों के क्रियाकलापों को निहार ही रहा था कि एक स्वर्णवर्ण सुंदर हिरण उसके पास से गुजरा। इससे पहले कि शिकारी अपने धनुष की प्रत्यंचा खींच पाता, हिरण गायब हो गया। परेशान शिकारी आगे बढ़ा तो उसे त्रिशूलधारी, जटायुक्त सर्पों की माला धारण किए शिव और उनके अनुचरों के दर्शन हुए। कुछ और आगे जाने पर शिकारी को नारद मुनि मिले, जिन्होंने उसे बताया कि केदार इतना पवित्र स्थल है कि यहाँ ऐसी विचित्र घटनाएँ होती रहती हैं। अगर किसी को मोक्ष पाना है तो उसे केदारनाथ आना चाहिए, भले ही उसने कितने भी पाप क्यों न किए हों। एटकिंसन ने इस कथा का उल्लेख करते हुए लिखा है कि हिमालय में लोगों की आस्था इतनी अटूट है कि यहाँ जल, जंगल, जमीन तो छोड़ें, यहाँ पशु–पक्षियों से भी छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। अगर छेड़छाड़ होगी तो उसके नतीजे के लिए भी तैयार रहें।

मान्यता है कि गंगा जब पृथ्वी पर अवतरित हुईं, शिव ने अपनी जटाओं में उन्हें रोक लिया। आज पहाड़ों में शिव की वे जटाएँ, पेड़–पौधे नहीं हैं, नदियों में रेत नहीं है। पानी के वेग को कौन रोकेगा?इसीलिए केदारनाथ से उतर कर मंदाकिनी ने रौद्र रूप दिखाते हुए अपने रास्ते में आने वाले सारे अवरोधों को तहस–नहस कर दिया। केदार भूमि में कब्जा करने वाले, मंदाकिनी के रास्ते में बड़े–बड़े होटल और रिजॉर्ट बनाने वाले निश्चित रूप से सामान्य लोग तो नहीं ही होंगे। पंडे, नौकरशाह, राजनेता और ठेकेदार ही ऐसा कर सकते हैं। जिस प्रदेश में नेता अपने रिश्तेदारों को अवैध रूप से भूमि उपलब्ध कराने में लगे हों, वहाँ यह उम्मीद क्यों की जाए कि सरकार की रुचि केदारनाथ को बचाने में होगी।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक खड्गसिंह वल्दिया कहते हैं कि हमारे पुरखे इतने समझदार थे कि उन्होंने केदारनाथ का मंदिर एक कठोर चट्टान के ऊपर बनाया। इसीलिए इस दुर्घटना के बाद भी मंदिर अपने स्थान पर खड़ा है। एटकिंसन ने भी कमिश्नर ट्रेल की प्रशंसा की है कि उन्होंने केदारनाथ जाने के लिए जो मार्ग बनाया, उसके चारों ओर पेड़ लगाए। मगर हमने केदारनाथ को एक पिकनिक स्थल बनाकर, उसके रास्ते में अवरोध खड़े कर एक प्राकृतिक घटना को भीषण मानवीय आपदा में बदल दिया।

चालीस साल पहले तक उत्तराखण्ड की राजनीति में लकड़ी और लीसे के ठेकेदार हावी थे। आज यहाँ शराब और पानी का माफिया राज कर रहा है। पहाड़ों पर बन रही जल विद्युत परियोजनाएँ इन राजनीतिक दलों के लिए पैसा उगल रही हैं। पूरे उत्तराखण्ड में 558 जल विद्युत परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं, जिनमें अकेले भागीरथी और अलकनंदा में ही 53 परियोजनाएँ हैं। अनुमान है कि इन योजनाओं के बनने पर पूरे उत्तराखण्ड में नदियों को करीब 1500 किलोमीटर सुरंगों के भीतर बहना होगा। मनेरी से उत्तरकाशी तक भागीरथी 10 किलोमीटर सुरंग में कैद हो गई है। जोशियाड़ा से पंद्रह किलोमीटर तक भागीरथी का किनारा उजाड़ हो गया है, लेकिन यही स्थान बरसात में तबाही का सबब बनता है।

रूद्रप्रयाग जनपद में इस बार की अतिवृष्टि ने जबर्दस्त तबाही मचाई। यहाँ मंदाकिनी पर बन रही जल विद्युत परियोजनाएँ न सिर्फ तबाह हो गईं, बल्कि इस क्षेत्र में हुई तबाही का कारण भी बनीं। इन परियोजनाओं के खिलाफ जनता ने लगातार आंदोलन किया था और सुशीला भंडारी और जगमोहन झिंक्वाण ने 65 दिन की जेल भी काटी। ऐसा ही जोशीमठ के पास बन रही 400 मेगावाट की विष्णुप्रयाग जल विद्युत परियोजना और 520 मेगावाट की तपोवन जल विद्युत परियोजनाओं के साथ भी हुआ। दरअसल परियोजनाओं के लिए अनुमति देने वाली सरकारों को कथितरूप से प्रति मेगावाट एक करोड़ की रिश्वत मिलती है। इस रिश्वत के आधार पर उन्हें पहाड़ों के साथ हर तरह का अत्याचार करने की खुली छूट मिल जाती है। यह छेड़खानी पहाड़ के लिए घातक होती है।

e-mail - shamshersinghbisht@gmail.com
Mobile - 09412092061

विनाशकारी प्राकृतिक आपदायें क्यों?

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

मानव समाज ने भौतिक क्षेत्र में अप्रत्याशित उन्नति की है परन्तु मानव यह भूला हुआ है कि प्रत्येक कार्य का प्रतिफल निश्चित है। यह प्रतिफल लाभकारी भी हो सकता है और अलाभकारी भी हो सकता है। जैसा कि गीता में कहा है कि :–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।। गीता–2–47।।

अर्थात् तुम्हारा कार्य करने का ही अधिकार है किन्तु उनके फलों के अधिकारी नहीं हो। अर्थात् फल का निर्धारण किसी अन्य शक्ति के अधीन है। वेद में :–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा।।यजु. 40–2।।

अर्थात् मनुष्य इस संसार में कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष का जीवन जीने की इच्छा करे। अर्थात् मनुष्य का कार्य करने का ही अधिकार है परन्तु कर्म दो प्रकार के होते हैं शुभ और अशुभ। मनुष्य अज्ञानवश दोनों प्रकार के कर्मों के अन्तर को समझने में असमर्थ रहता है। परिणाम स्वरूप अत्यधिक अशुभ कर्म होने पर आपदाओं और विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

वेद में ईश्वर ने आज्ञा दी है :–

मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञान्द्रि सोमिनः।
मान्त स्थुनो अरातयः।। अथर्व. 13–1–59।।

अर्थात् हम वेद ज्ञान मार्ग से विचलित न हों और ऐश्वर्यवान यज्ञ कर्म (देवपूजा, संगतिकरण और दान) को न त्यागे। अदानियों (स्वार्थी, लोभी) को अपने मध्य न ठहरने दें।

परन्तु इस वेद आज्ञा के विरूद्ध अदानियों (स्वार्थी व लोभी) मनुष्यों की वृद्धि तीव्र गति से ही हो रही है जो अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु अज्ञानी जनता को विभिन्न झूठे, असत्य प्रलोभनों में फँसाकर अनैतिक व प्रकृति के विरूद्ध कार्य कराते रहते हैं। जिनका प्रतिफल ही अज्ञानी जनता को प्राकृतिक आपदाओं, विपत्तियों और विनाशकारी घटनाओं के रूप में भुगतना अवश्यंभावी हो जाता है। सुनामी, अमेरिका और चीन में बाढ़, लातूर में भूकम्पन विनाश और वर्तमान का उत्तराखण्ड और हिमाचल का विनाशकारी जल प्रपात, मानव द्वारा किये जा रहे विभिन्न प्रकार के वेद ज्ञान के विरूद्ध कार्य, जैसे – नशीले पदार्थों का सेवन, माँसाहार, पाषाण पूजा और स्थान विशेष पर जाने, नहाने और दान करने से बुरे कर्मों के फल भोग से मुक्ति की असत्य धारणा ही है।

मनुष्य प्राकृतिक आपदाओं को ईश्वरीय कहर (दण्ड) तो स्वीकार करता है परन्तु अपने आचरण और वेद विरूद्ध अशुभ कार्यों में परिवर्तन करना नहीं चाहता और फिर दोबारा उन्हीं कर्मों को करने में आसक्त हो जाता है जिनके कारण विपत्तियाँ फिर भोगनी पड़ी थी। स्वार्थी व लोभी मनुष्य अज्ञानी जनता को फिर बहकाना आरम्भ कर देते हैं।

मानव चाहे जितनी भौतिक प्रगति कर ले परन्तु कर्मफल पर नियन्त्रण नहीं कर सकता। प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणी करने हेतु अनेक यन्त्र और विधियाँ खोजी जा चुकी हैं और खोज जारी है। परन्तु ये सभी प्राकृतिक (ईश्वरीय) आपदाओं के देश, काल व समय के निर्धारण में असफल ही सिद्ध हुई है और होंगी, क्योंकि ईश्वरीय व्यवस्था को कोई मानव बदलने में समर्थ नहीं है।

अगर इन आपदाओं, विपत्तियों व विनाशों से बचना है तो शासन को नशीली वस्तुओं के उत्पादन, माँसाहार पर, पाषाण पूजा पर और झूठी मान्यताओं के आधार पर विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों, सभाओं में होने वाली भीड़ पर कठोर नियन्त्रण करना होगा।

आर्य समाज लगभग गत 150 वर्षों से वेद ज्ञान के विरूद्ध कार्यों के उन्मूलन में लगा हुआ है लेकिन शासन की नीतियाँ वेद ज्ञान के विरूद्ध होने के कारण उचित परिणाम नहीं मिल रहे हैं। यदि शासन आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाकर तदानुसार नीतियों का निर्धारण करें तो शीघ्र ही भारत में ही नहीं विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है क्योंकि आर्य समाज के सिद्धान्त किसी व्यक्ति, समुदाय, समूह या देश विशेष के लिए न होकर विश्व कल्याणार्थ ही हैं और पूर्णतः वेद ज्ञान पर आधारित हैं।

अतः हमें महर्षि दयानन्द का नारा "वेदों की ओर लौटो" पुनः बुलन्द करना होगा तभी विनाशकारी प्राकृतिक आपदायें शान्त होना सम्भव है।

उत्तराखण्ड : मनुष्य निर्मित विनाश

– रमणिका गुप्ता

केदार नाथ मंदिर में स्थित बर्फ से चोले में सुसज्जित तथाकथित शिव भगवान अपनी सर्द आँखों से उत्तराखंड का विनाश देखते रहे, पर वे अपने भक्तों का या उत्तराखण्ड की भूमि का विनाश रोक नहीं पाए। उनके गर्भगृह में गर्म खून से लथपथ लाशें, पानी की हरहराती लहरों के साथ आकर जमा हो गईं, वे नहीं पिघले। सर्वनाश होता रहा। धर्मशालाएँ गिर गईं। घर गिर गये। सड़कें टूट गईं। विष पी जाने की क्षमता रखने वाले शिव, समुद्र मंथन में अहम् भूमिका निभाने वाले शिव, उफनते पानी की धार और बरसती बूंदों की बौछार को न तो पी सके, न उन्हें रोक सके। कितनी दूर तक विनाश लीला गिनाऊँ?हमारे कितने जवान अपनी जान जोखिम में डाल कर श्रद्धालुओं और वहाँ की स्थानीय जनता की रक्षा करने में दिन–रात लगे हुए हैं। सबसे बड़ा अनर्थ यह हुआ कि बचाव रक्षा में लगा हेलिकॉप्टर भी गिर गया, जिसमें बीस फौजी जवान शहीद हो गए। अखबार में किसी फौजी जवान ने एक टिप्पणी की 'बचाव के कार्य में भी ईश्वर उनके साथ नहीं हैं।'

'आखिर क्यों?' कितने दिनों तक इन कोरी कल्पनाओं के साथ रहेंगे लोग कि भगवान आयेगा और बचायेगा। भगवान होता तब न बचाता। केदारनाथ के सर्वशक्तिमान 'शिव' तो अपने ही गाँव की रक्षा नहीं कर पाए तो किसी और की रक्षा क्या करेंगे?पता नहीं क्यों हमारे देवता अपने को इतना निरीह और कमजोर महसूस करते हैं कि उन्हें हर दम हथियारों से लैस होकर रहना पड़ता है।

एक बार जरा इतिहास में जाएँ, तो सोमनाथ का मंदिर याद आता है। मंदिर के पुजारी ने सभी राजपूत राजाओं को दुश्मनों का मुकाबला करने से यह कहकर रोक दिया था, ''शिव भगवान का त्रिशूल हिलेगा और शत्रु–सेना नष्ट हो जायेगी। किसी को तलवार उठाने की जरूरत नहीं है।'' और त्रिशूल हिला ही नहीं। सब राजा दुश्मनों के हाथों गाजर–मूली की तरह काट दिए गए। ये तो बाद में पता चला कि सोमनाथ के राजा का भाई ही दुश्मन से मिल गया था और उसी के कहने से पुजारी ने राजाओं को मंदिर में जमा राजाओं को मुकाबला करने से रोका था। यही अंधविश्वास और धारणाएँ ही भारतीय मानस को जड़ बनाती हैं, संवदेनहीन बनाती हैं, पुरुषार्थ को खत्म करती हैं और उन्हें किसी अनदेखी शक्ति के भरोसे छोड़ देती हैं। खैर!

ऐसी दुर्घटना के दौरान जनता का एक और चेहरा भी देखने को मिला। राहत सामग्री भेजी जा रही है, और चंद दबंग लोग उसे अपने हितार्थ लूट कर जमा कर रहे हैं। जिनके लिए सामग्री चाहिए उनके पास पर्याप्त मात्रा में सामग्री नहीं पहुँच रही। वह मजबूर होकर बिस्कुट का एक पैकेट हजार रुपये में पानी की एक बोतल पांच सौ रुपया में खरीद रहे हैं। ऊँचे दाम पर सामान बेचने वाले ये लोग ईश्वर–भक्त लोग ही तो हैं न?कैसे भक्त हैं ये और कैसा है उनका ईश्वर?जिनके पास पैसा नहीं है, वे सूनी आँखों से मौत को आते देख रहे हैं। अखबार में पढ़ा कि तेल बंट रहा है और एक ही व्यक्ति तीन पीपे तेल ढो कर लिए जा रहा है, बिना यह सोचे कि सैकड़ों लोग उस तेल के भागीदार हैं, जिन्हें वह वंचित कर रहा है। वहाँ मौजूद धर्म के ठेकेदार और दुकानदार इस दुर्घटना का फायदा उठा कर 'लूट सके तो लूट' मचा रहे हैं। कई साधू लूटे हुए नोटों के साथ पकड़े गये हैं। पकड़ाये गये ये सभी तो उसी ईश्वर के भक्त हैं न?पता नहीं क्यों लोग ईश्वर–प्रेमी तो बन जाते हैं पर मनुष्य–प्रेमी नहीं बन पाते?ईश्वर के होने या न होने से कहाँ फर्क पड़ता है दुनिया में।

ईश्वर को मानने वाला मनुष्य ही तो प्रकृति को रौंद रहा है। देखा जाए तो सृष्टि की असली ताकत तो प्रकृति और मनुष्य हैं। इस तीसरी ईश्वर नामक अनदेखी शक्ति के चक्कर में हम उपरोक्त इन दोनों शक्तियों की उपेक्षा कर देते हैं। आज गति को काबू करने को कटिबद्ध मनुष्य समय को रोकने की कोशिश कर रहा है। गति को रोकना चाह रहा है। वह प्रकृति पर कब्जा जमा कर उसे अपने इशारों पर नचाना चाहता है। उसने नदियों को घेर लिया। नदियों के पेट में घर बना लिया। नदियों में कूड़ा भर दिया। पहाड़ों को उजाड़ा ही नहीं उखाड़ भी डाला। रास्ता छोटा करने के चक्कर में उनमें सुरंगें बनाकर आर–पार हो गया। परमाणु तक को तोड़ने की शक्ति अर्जित कर ली है उसने। ये शक्ति, सृष्टि और मनुष्य दोनों को ध्वस्त कर सकती है। अब तो ऐसे बम भी बन गए हैं कि घर खड़े रहेंगे पर मनुष्य मर जायेंगे। यानी मनुष्य की सीमेंट–कृत रचना बरकरार रहेगी, मनुष्य की अपनी कोख से जन्मी कृति नष्ट हो जायेगी। कैसा मनुष्य है यह?अपने ही विरूद्ध षड्यंत्र?पूरा कालिदास है, जिस पेड़ की टहनी पर बैठा है उसे ही काट रहा है।

ऊपर से धार्मिक नेताओं के फतवे पर फतवे और बयान कहर बरपा रहे हैं। 'यह तो ईश्वर का कोप है, देवी का कोप है।' उमा भारती को देवी पर इतना विश्वास है, तो वह बार–बार सरकार से क्यों कहती हैं कि गंगा साफ करे? उनकी देवी ने क्यों नहीं गंगा साफ कर दी? और गंगा तो खुद भी देवी मानी जाती है। खुद अपने को साफ क्यों नहीं रख सकी गंगा मैया कहलाने वाली देवी? हम सब खूब जानते हैं कि भारतीय जनता का बहुसंख्यक हिस्सा अनपढ़, अशिक्षित और अज्ञानी है। उसी का लाभ उमा भारती जैसे लोग उठा कर, उन्हें निष्क्रिय बनाते हैं। तर्कशील बनने की जगह आस्थावान बनने को कहते हैं।

एक और नमूना इस अंधविश्वास का देखें। केदारनाथ से लौट कर आये श्रद्धालु का कहना है – 'भोला बाबा दूत बनकर आये सैनिक और उन्हें बचा लिए।' अब भला बीच में 'भोला बाबा' कहाँ से आ टपके? सैनिक देश का रखवाला है, देशवासियों को बचाना उसका कर्त्तव्य है। सैनिकों ने बखूबी अपना कर्त्तव्य निभाया। बजाए उनकी निष्ठा को नमन करने के, हमारे श्रद्धालु सैनिकों को भोला बाबा का दूत बनाकर उनकी कर्त्तव्य–निष्ठा की अवमानना कर रहे हैं। पता नहीं कब हम ईश्वर की बजाय मनुष्य की इज्जत और अपनी इज्जत करना सीखेंगे।

उधर हमारे पर्यावरणवादी लोगों की चिंता सही है कि प्रकृति का विनाश ही इस तबाही का कारण है और ये विनाश का जिम्मेवार स्वयं मनुष्य है। ये सही है ये तबाही मनुष्य निर्मित है चूंकि हम प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहे हैं, जो एक बंधे बंधाये नियम में चलती हैं। मनुष्य नियम तोड़ने का आदी है, चूँकि उसके पास सोचने की शक्ति है। वह अपनी सुविधा के लिए हर नियम तोड़ता है और मनमाफिक कर्म करता है। वह सृजन भी करता और विनाश भी, चूँकि मनुष्य ही मनुष्य का सृजक है और मनुष्य स्वयं ही मृत्यु भोगता है। वास्तव में मनुष्य सृजन और विनाश का पुलिंदा है। इस मनुष्य में जन्मजात प्रवृत्तियाँ हैं। चूँकि वह पशु से मनुष्य बना है इसलिए उसकी पशु–प्रवृत्ति ज्यादा जोर मारती है तो वह विनाश की ओर बढ़ता है। ऐसे भी मनुष्य की सुरक्षात्मक प्रवृत्ति उसके सिर पर हमेशा खतरे की घंटी बजाती रहती है। इस अदेखे खतरे से बचने के लिए वह अपना सुरक्षा–कवच बनाने के साथ ही दूसरे के विनाश का प्रपंच भी रचता है। यही द्वंद्वहै। प्रकृति से मनुष्य का, मनुष्य से मनुष्य का, विनाश और विकास का। मनुष्य जब इस द्वंद्वको समझ लेता है तो वह विकास की ओर अग्रसर होता है। तब वह केवल उन तत्त्वों का विनाश करता है, जो विकास में बाधक हों। पर आज समाज में विनाश के बल पर विकास की प्रवृत्ति बढ़ रही है – खासकर सरकारों में। एक अत्यन्त ही छोटा अभिजात तबका अपना विकास एक बड़े तबके की कीमत पर कर रहा है। यानी 90 प्रतिशत की कीमत पर 10 प्रतिशत का विकास हो रहा है। दुनिया की सामंती, पूंजीवादी व साम्राज्यवादी सरकारों का यही नियम है। हम नहीं कहते कि हम बैलगाड़ी युग में चले जाएँ या झोपड़ियों में रहने लगें लेकिन विकास के नाम पर हम प्रकृति और प्रर्यावरण को रौंदते रहेंगे, तो न जाने कितने उत्तराखण्ड घटेंगे?दोनों ध्रुवों पर ग्लेश्यिर भी पिघल रहे हैं। इनके पिघलने पर धरती को डूबने या समुद्र में तब्दील होने में देर नहीं लगेगी। कभी कल्पना करती हूँ कि ऐसी स्थिति मकें जब पृथ्वी नहीं रहेगी तो समुद्र में मगरमच्छ और मछलियाँ ही बच जायेंगी, तब क्या होगा?

अभी तो चिंता हमें उन हजारों लोगों की है जो वहाँ फँसे हुए हैं। श्रद्धालु भी, पर्यटक भी। हम नमन करते हैं अपने फौजी भाइयों की निष्ठा और लगन को। काश, हमारी जनता में भी यही जज्बा भर पाए और वे अपने सारे संसाधनों का मुँह उत्तराखण्ड के पीड़ितों को राहत पहुँचाने में लगा दें। हालांकि वहाँ स्थानीय लोगों द्वारा श्रद्धालुओं और पर्यटकों को पहुँचाई जा रही मदद आश्वस्त करती है कि हममें अभी भी मानवता बाकी है–संवेदना जिन्दा है।

गिद्ध की तरह झपट्टा मारकर दूसरे का हिस्सा ले भागना, लूट कहलाता है, जो न्याय परक नहीं होता यह। इसके लिए भारतीयों को अपनी मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाना होगा। दुर्भाग्यवश कोई भी धर्म न तो हमें तर्क सिखाता है, न अनुशासन और न ही ईमानदारी। भारत में तो भगवान को घूस देकर सारे पाप माफ हो जाते हैं। इसलिए जितना चाहे कुकृत्य करो, पैसा बनाओ, भ्रष्टाचार करो, घूस देकर तो माफी मिल ही जानी है। गंगा में डुबकी लगाकर पाप कट ही जाने हैं। इसलिए आज हमारे यहाँ अधिकतर वही ईमानदार रह पाता है, जिसे बेइमानी करनी नहीं आती।

दूसरा मुद्दा है अनुशासन का। देवघर में शिव के दर्शन करने हों, तो पंडित को पैसा दे दीजिए, बस दस हजार की भीड़ कतार में बाहर लगी होने के बावजूद आप दर्शन कर लेंगे। फिर अनुशासन की क्या दरकार?क्यों कोई कतार में लगे?

तीसरा मुद्दा है अंधविश्वास! आस्था है, विश्वास है तो सोचने की क्या दरकार? बस विश्वास करो। जो धर्म ग्रंथों में लिखा है, शास्त्रों में लिखा है, उसे मानो। बस कर्म करो, फल की इच्छा न करो। यानी मेहनत करो उसके एवज में मजदूरी भी न मांगो। मरने के बाद स्वर्ग में फल मिल ही जायेगा या अगले जन्म में किसी बड़े घर में पैदा हो जायेगा, तो पौ बारह हो ही जायेगी। इस जन्म में दुःख है तो क्या हुआ, अगला जन्म तो ठीक होगा ना! यह स्वर्ग या अगला जन्म किसने देखा है, जिसके भरोसे जनता को पुरुषार्थहीन बना दिया जाता है?

रह गई सरकार द्वारा व्यवस्था की बात। आपात् स्थिति में राहत की व्यवस्था जरूर पहले सोचकर रखनी चाहिए लेकिन यह समय राजनीति का नहीं है। आपात्कालीन व्यवस्था क्या हो सकती थी, सिवाय इसके कि इनका सूचना तंत्र ठीक रहता तो विनाश का कुछ आभास पहले मिल जाता या राहत की सामग्री तैयार रहती तो समय पर दी जा सकती। लोग भूख से तो नहीं मरते या घटना–स्थलों से ढोकर लाने में देरी के कारण तो मारे नहीं जाते। लेकिन हम भी तो

अगले पृष्ठ पर जारी है

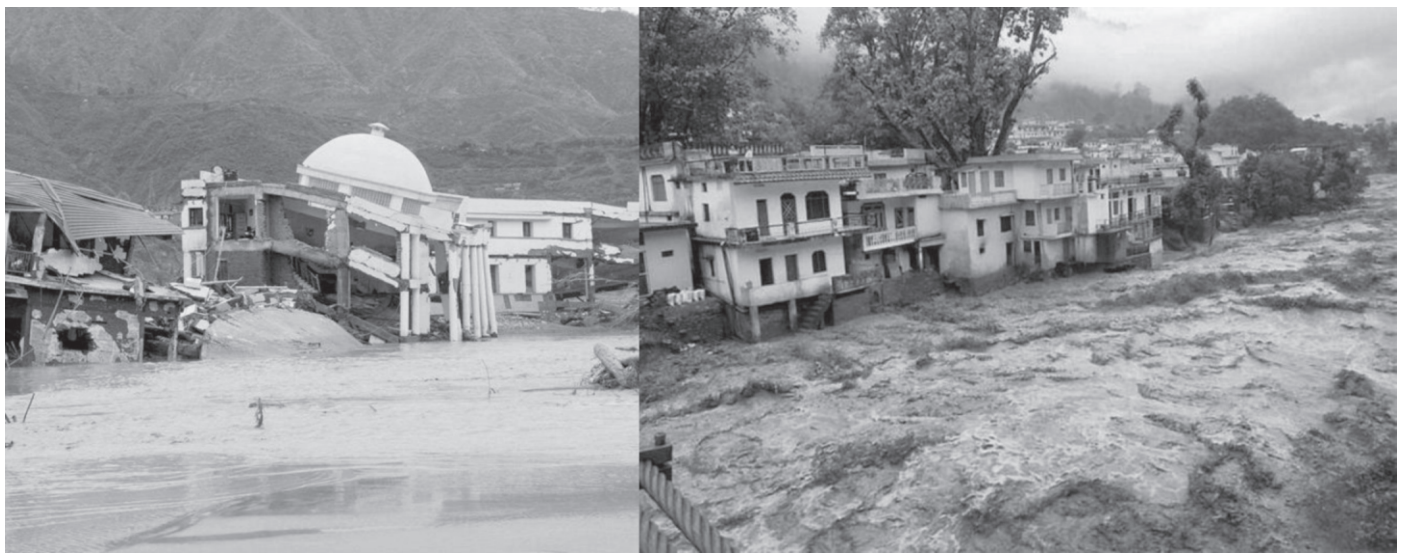

पृष्ठ–3 का शेष

विश्व भाषा का सपना

संपदा है। हिन्दी ने संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी, अरबी, पुर्तगाली, तुर्की, अंग्रेजी, फ्रांसीसी आदि अनेक भाषाओं के शब्दों के खुले मन से अपनाया है और अपनाने से कोई परहेज नहीं किया है।

अंग्रेजी के एक–एक शब्द के लिए हिन्दी के पास दस–दस पर्याय हैं। इन पर्यायों में हमारे पुरखों के अनुभव ज्ञान का खजाना खनकता है। करोड़ों लोगों के द्वारा प्रयोग में लाने से हिन्दी में यह ताकत आई है। मानवीय भावों, विभावों, कारकों, रूपकों के लिए हिन्दी की सामर्थ्य और सूक्ष्मता देखते ही बनती है। हिन्दी की वाग्देवी ने ऐसे वाक्द्वार निर्मित किए हैं कि उनमें संस्कृत की अपार संपदा समा गई है। व्याकरण, दर्शन, धर्म, अर्थ–मीमांसा के विमर्श हजारों सालों से प्रवाहमान है। विचार की एक परंपरा न होकर अनेक परम्पराएं हैं।

एक परम्परा ने 'नाट्यशास्त्र' को जन्म दिया – संचय करके आकार दिया – तो संस्कृति की लोकधर्मी परम्पराओं ने 'भास्कर रत्न कोश' और 'सदुक्ति कर्णामृत' की लोक संवेदना का वरदान दिया। वैयाकरण पाणिनि ने धातुओं से अनगिनत शब्द निर्मित करने की कला का दान दिया। एक धातु से लगभग दो हजार शब्द मजे से बनाए जा सकते हैं। हिन्दी के पास संस्कृत की अपार संपदा है, इसलिए हिन्दी गरीबों की भाषा होकर भी गरीब भाषा नहीं है। यह गरीबों की अनुपम सम्पन्न समर्थ भाषा है और उसके पास व्यापार बाजार के शब्दों की कमी नहीं है।

आज हिन्दी को अंग्रेजी की गुलामी से संघर्ष करना पड़ रहा है। इस गुलामी के कारण ही समाज में उसका आदर कम है। लेकिन अब भूमंडलीकरण, बाजारवाद, व्यापारवाद का दौर है। हिन्दी के पास एक बहुत बड़ा बाजार है। जैसे–जैसे भूमंडलीकरण बढ़ेगा, हिन्दी अपने आप बढ़ेगी।

हिन्दी चूँकि दलितों–दमितों, श्रमिकों की भाषा है, इसलिए सफेद पोश अंग्रेजी वाले लोग उससे डरते रहे हैं। वे हिन्दी में वोट मांगते हैं, मगर राज–काज अंग्रेजी में चलाते हैं। यह छलावा हिन्दी भाषी समझ रहे हैं। इसलिए एक दिन परिवर्तन अवश्य होगा। हिन्दी का घोड़ा अंग्रेजी की गाड़ी को पछाड़कर आगे निकलेगा।

यह विचार भूमंडलीकरण का प्रसार दृढ़ कर रहा है। विदेशी कम्पनियाँ अपना माल बेचने भारत में उमड़कर आ रही हैं। जर्मन, फ्रांसीसी, चीनी कम्पनियों को अपना माल हमारे बाजारों में बेचना है तो हिन्दी से बचा नहीं जा सकता। व्यापारी उसी भाषा में ग्राहक से बात करेगा जिस भाषा में उसके माल की बिक्री होगी। उसका काम अंग्रेजी से नहीं चलेगा। यहाँ वह हिन्दी बोलेगा तो धन कमायेगा। इस तरह भारतीय भाषाओं का भविष्य बाजारवाद के युग में उज्ज्वल है।

अब बहुतों को समझ में आ गया है कि रूपर्ट मर्डोक अपना चैनल हिन्दी में चलाने के लिए क्यों लपक रहे हैं?क्यों बिल गेट्स भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर बनाने को लालायित हैं?कम्प्यूटर और फोन वाले भारत में दिन–रात बढ़ रहे हैं। वे प्रयोग की कौन सी भाषा अपना रहे हैं?भारतीय भाषाएँ या अंग्रेजी?मोबाइल फोन वाली कम्पनियाँ अब फोनों में कौन सी भाषाएँ डाल रही हैं?हर तरफ भारतीय भाषाओं का हिन्दी का बाजार गरम है। विदेशी लोग हिन्दी सीख रहे हैं ताकि वे हिन्दी में व्यापार कर सकें।

अमेरिकी सरकार हिन्दी सीखने–सिखाने पर करोड़ों डॉलर खर्च कर रही है ताकि वह भारत से अरबों कमा सके। अरब व्यापारी अंग्रेजी नहीं जानते। वे अपना पूरा काम अरबी से चलाते हैं और अपने माल पर अरबी भाषा में लिखते हैं। व्यापार करने के लिए अमेरिकी और जापानी अरबी में लिखते हैं ताकि उनका माल अरब देशों में बिक सके। मूल बात यह कि सभी देशों के बाजार की भाषा उनकी अपनी भाषा है। केवल अंग्रेजी की गुलामी वाले इसके अपवाद हैं।

उत्तर आधुनिकता के काल में बाजारवाद और भाषा संस्कृति को लेकर जो उत्तेजक बहसें हैं उनमें जाने का यहाँ औचित्य नहीं है। लेकिन इतना जानना जरूरी है कि इनके मुद्दे बहुआयामी, जटिल और अधिक से अधिक मुनाफा कमाने से जुड़े हैं। नव पूँजीवाद पूरी दुनिया को एक शॉपिंग काम्प्लेक्स में बदल रहा है। हर चीज बिकाऊ है, चाहे औरत की देह हो या कैमरा या साबुन।

पूरा अर्थशास्त्र बाजारवाद पर निगाह लगाए हुए हैं। बाजार की अर्थव्यवस्था, वैश्विक पूँजी, उपभोक्ता संस्कृति, मीडिया क्रांति, उच्च टेक्नोलॉजी सभी कुछ स्थिति–परिस्थिति के दबाव से भाषा को बदल रहे हैं। संस्कृति, संचार और संप्रेषण का क्षेत्र इस गति से बदल रहा है कि बदलाव को ठीक से पारिभाषित करना कठिन हो गया है। अकेली हिन्दी में न जाने कितने शब्द मीडिया क्रांति से आ रहे हैं और हिन्दी उन्हें अपना कर फैल रही है।

इस तरफ भीड़ तंत्र और मुनाफे की संस्कृति पनप रही है – हाइपर रियलिटी अर्थात् मायावी यथार्थ का समय है, हर तरफ छवियाँ ही छवियाँ है। भाषा में विचारों के सभी केन्द्र ध्वस्त हो गए हैं। बहुराष्ट्रीय निगमों और वैश्विक पूँजी ने राष्ट्रों की सीमाओं को अप्रासंगिक बना दिया है। उन्नत देशों के अन्तरराष्ट्रीय बैंकों और स्टॉक एक्सचेंजों का प्रभुत्व अब संसार भर पर छा गया है और पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में फोर्डिज्म का पुराना ढाँचा ढह गया है। नई उत्पादन प्रणाली में कम्प्यूटर प्रणालियों, सूचना प्रौद्योगिकी और स्वचालित मशीनों का बोलबाला है।

उत्पादन प्रणाली में तकनीकी विशेषज्ञों, प्रबंधकों, प्रोफेशनलों की कीमत और संख्या दोनों में वृद्धि हुई है। हिन्दी क्षेत्र एमबीए और एमसीए कल्चर से पट गए हैं। इन सभी के भीतर से एक नई हिन्दी का विश्वभाषा हिन्दी का जन्म हो रहा है। हिन्दी में बीते हुए इतिहास के संदर्भ खो रहे हैं। विज्ञापन का उपभोगमूलक संदर्भ हिन्दी भाषा को भीतर से बदल रहा है – वह ऐसी हिन्दी ला रहा है जो जनसाधारण के मनोजगत पर कब्जा कर सके।

वैश्वीकरण से कुछ लोग भयभीत हैं। उन्हें लगता है कि यह भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी जैसा दूसरे प्रकार का हमला है। हमला इतना जबर्दस्त है कि भारतीय संस्कृति की चूलें हिल गई हैं और बौद्धिक प्रदूषण बढ़ रहा है। हम भारतीय अजीब हैं – उपभोक्तावादी संस्कृति की सभी वस्तुएँ इस्तेमाल कर रहे हैं और अपनी भाषा संस्कृति को बचाने की बात को लेकर गाल बजा रहे हैं। देशी भाषाओं बोलियों को बचाना चाहते हैं, जब कि लोकसंस्कृति की लय नष्ट हो रही है। यह सब होते हुए भी हिन्दी बिना सरकारी सहारे के अपने दम पर आगे बढ़ रही है।

सरकार के राजभाषा विभाग इस क्षेत्र में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं। हिन्दी की तमाम सलाहकार समितियाँ हाथी–दाँत बनकर रह गई है। हिन्दी को आगे बढ़ाने के नाम पर होने वाला सरकारी तमाशा अद्भुत है। सरकार का काम क्या, पत्र–व्यवहार तक हिन्दी में नहीं होता। सरकारी अफसर हिन्दी के समारोहों से पाँच मिनट का लिखा भाषण हिन्दी में पढ़कर गायब हो जाते हैं। उनमें हिन्दी के प्रति हिकारत का भाव है। हिन्दी करे क्या?

भारत में हिन्दी सरकार के बल पर नहीं, जनता के बल पर जीवित है। सरकारी स्तर पर कोई काम मौलिक ढंग से हिन्दी में नहीं हो रहा। करोड़ो रुपये बर्बाद करके सरकार हिन्दी के मौलिक कार्यों में अडंगा लगाती है। लेकिन हिन्दी है कि उसकी पत्रिकाएँ अखबार फिल्में अंग्रेजी की तुलना में ज्यादा बिकते हैं। यही हाल हिन्दी पुस्तकों का है। अब भी प्रेमचन्द बाजार में सबसे ज्यादा बिकते हैं और हिन्दी की पुस्तकें अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों से ज्यादा छपती है। हिन्दी अखबारों के तो तीस–तीस लाख संस्करण बिकते हैं।

भारत में हिन्दी सरकार के बल पर नहीं, जनता के बल पर जीवित है। सरकारी स्तर पर कोई काम मौलिक ढंग से हिन्दी में नहीं हो रहा। करोड़ो रुपये बर्बाद करके सरकार हिन्दी के मौलिक कार्यों में अडंगा लगाती है। लेकिन हिन्दी है कि उसकी पत्रिकाएँ अखबार फिल्में अंग्रेजी की तुलना में ज्यादा बिकते हैं। यही हाल हिन्दी पुस्तकों का है। अब भी प्रेमचन्द बाजार में सबसे ज्यादा बिकते हैं और हिन्दी की पुस्तकें अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों से ज्यादा छपती है। हिन्दी अखबारों के तो तीस–तीस लाख संस्करण बिकते हैं।

विदेशी भाषाओं का सर्वाधिक अनुवाद हिन्दी में होता है और खूब बिकता है, चाहे 'हैरी पॉटर' हो या 'सूटेबल ब्वाय' या 'द सेकण्ड सेक्स' जैसी पुस्तक हो। हिन्दी फिल्में जापान मलेशिया तक धूम मचा रही है। हिन्दी के इस बाजार के कारण ही आज दुनिया के सत्तर से ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। दुनिया में लाखों छात्र विदेश में रहकर हिन्दी पढ़ रहे हैं। विश्व में हर जगह भारतीय रहते हैं और हर जगह है हिन्दी भाषा। सच तो यह है कि आज हिन्दी का रथ विजय के लिए निकल पड़ा है। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी विश्वभाषा के रूप में महत्त्व और प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी।

आज यह कहना गलत है कि हिन्दी में एक भी ऐसा अखबार नहीं जो अंग्रेजी अखबार की तरह समग्रता में पाठक को परितोष प्रदान कर सके। हाँ, हिन्दी के पास ढंग की समाचार एजेंसी का अभाव है, जिसके कारण हमें अंग्रेजी का मुँह जोहना पड़ता है। बड़ी खबरें हमें देर से मिल पाती है और हम विदेश का कवरेज बहुत कम कर पाते हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए भारत को अपना शक्तिशाली खबर तंत्र विकसित करना होगा।

हमारा संवाददाता हिन्दी के साथ अंग्रेजी जानता है, लेकिन जापानी, फ्रांसीसी, जर्मन, अरबी जैसी दुनिया की अन्य प्रमुख भाषाओं में से किसी से उसका परिचय नहीं है और न ही वह स्थानीय खबरे छान पाता है। हिन्दी को विश्वभाषा बनाना है तो हमें संसार भर की भाषाएँ सीखकर अपने संवाददाता बनाने होंगे ताकि दुनिया की कोई भी खबर पहले पहल हिन्दी में छपे। तभी हिन्दी का प्रभुत्त्व बढ़ेगा। भारत को अगर महाशक्ति बनना है तो उसे दुनिया के साथ अपनी भाषा में संवाद करते हुए आगे बढ़ना होगा। ऐसा होते ही हिन्दी विश्वभाषा की महिमा को प्राप्त कर लेगी।

– एक्स–102/3, एस. एफ. एस., फ्लैट्स, साके, नई दिल्ली

पृष्ठ–6 का शेष

उत्तराखण्ड : मनुष्य निर्मित विनाश

कम दोषी नहीं हैं। हमारे लोग भी तो जब तक पानी सर तक न पहुँच जाए घर छोड़ने को तैयार नहीं होते। बिहार में आई 1975 की बाढ़ की मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ।

उत्तराखण्ड की सड़के टूट गईं हैं। अब सड़क कोई ऐसा उपस्कर तो नहीं कि बनाकर स्टोर में रखी जा सके और जरूरत पड़ने पर तुरंत बिछा दी जाए कि लोग उस पर चलकर आ जाएं। हेलीकॉप्टर और हवाई जहाज उपलब्ध करा दिए हैं और सेना लोगों को ला भी रही है। रही बात सरकार, प्रशासन, अफसर, पुलिस व अधिकारियों की निष्ठा से काम करने की। इस पर सवाल जरूर उठ सकते हैं। योजनाओं को समय पर पूरा न करने पर भी प्रश्नचिन्ह लगाया जा सकता है। आपात्काल की तैयारी पर कोताही बरतने का आरोप भी अपनी जगह सही हो सकता है। लेकिन आरोप लगाने से पहले एक किस्सा सुनें। मिर्ची से भूत भगाया जाता है लेकिन जब मिर्ची में ही भूत घुस जाए, तो कैसे भगेगा भूत?भूत ही मिर्च का आदी हो जाए, तो क्या हश्र होगा आप समझ सकते हैं?यहाँ तो मिर्च में ही भूत घुस गया है। पूरा का पूरा 'आवा' ही ऊत गया है। सारा प्रशासन आज नहीं, पहले से ही भ्रष्ट है। फिर उत्तराखण्ड की दुर्घटना से प्रशासन का रवैया एका–एक कैसे बदल जायेगा?जिन्हें हर आपात्काल पैसा बनाने का जरिया नजर आता हो। उनसे यह उम्मीद कैसे की जा सकती है?ये नौकरशाही भी जनता के बीच से ही आती है। उसकी मानसिकता बदलने के लिए व्यवस्था बदलनी होगी और व्यवस्था बदलने के लिए सरकार की नहीं, जनता की दरकार होती है। जनता का हथियार होता है क्रान्ति। क्या हम क्रान्ति को तैयार हैं?शायद नहीं। हम तो बहुत धैर्यवान लोग हैं। भगवान का नाम लेकर गरीबी सह लेते हैं। भगवान का नाम लेकर किसी की इज्जत लूट लेते हैं या अपनी बहू–बेटी की इज्जत गंवाने को तैयार रहते हैं। भगवान का नाम लेकर किसी की हत्या तक कर देते हैं। इंसान की मार भी सह लेते हैं और प्रकृति का उत्पात भी। कभी–कभार थोड़ी देर हल्ला करते हैं। कुछ लोग गरियाते हैं, तो बाकी लोग उसकी वाक्पटुता पर ताली बजाते हैं। बाबाधाम जाना हो तो पेट के बल रेंगते हुए चले जाते हैं। केदारनाथ धाम में बर्फ को झेलते–झेलते पहुँच जाते हैं, लेकिन रोजगार के अधिकार की बात करनी हो, मानवता के अधिकारों की बात करनी हो, तो कुछ संगठित तबकों को छोड़कर, लोग घर से बाहर नहीं निकलते। खासकर मध्यवर्गीय तबका, जो अपने स्वार्थ पर तो बाहर निकल आता है लेकिन मारुती के मजदूरों के आंदोलन पर, हकों के लिए उनके गोलियों से भून दिए जाने पर उनका साथ देने के बजाय, हड़ताल का विरोध करता है। हाँ इधर जरूर दिल्ली में हुए सामूहिक बलात्कार के मुद्दे पर लोग निकले, मोमबत्तियाँ जलाये। लेकिन अभी भी करने के लिए बहुत बाकी है। अपने हित में सोचने वाले लोग क्रान्ति नहीं ला सकते। व्यक्ति क्रान्ति नहीं लाते, साधु–संत क्रान्ति नहीं करते, जमातें क्रांति किया करती हैं। लेकिन भारत के जातितंत्र ने मनुष्य को इतना बाँट दिया कि वह जमात बन ही नहीं सका। गुजरात में भूचाल आया तो राहत के लिए लगाए गये कैम्पों में सवर्णों ने दलितों को राहत नहीं बांटने दीं और दलितों के हाथों से सवर्णों ने राहत नहीं स्वीकार की।

बहुत बड़ी लड़ाई लड़नी है इस देश को इन वर्चस्ववादी सांमती प्रवृत्तियों, बाजारवाद और पूंजीवाद रूझानों से मुक्ति पाने के लिए! ये व्यवस्थाएँ व्यक्तिवादी हैं, समाज हित की नहीं। हमें बदलाव लाने के लिए सामूहिक और संवेदनशील सामाजिक व्यवस्था चाहिए जो समाज की सोचे, व्यक्ति की नहीं। क्या हमारा लोकतंत्र, जो भीड़तंत्र, जातितंत्र, धर्म–तंत्र और क्षेत्र–तंत्र बनकर रह गया है, देश को राहत देने के काबिल है?यह भी सोचने का विषय है। भारतीय लोकतंत्र को कैसे इन उपरोक्त तंत्रों से बचाया जाए, यह एक यक्ष–प्रश्न है।

उत्तराखण्ड से लौटे लोगों के मन में यदि यह बात कौंध जाए कि भगवान भी कुछ नहीं कर सकता, तो शायद वे तर्क करना सीख जाएँ और उनका एक मजबूत कदम मनुष्यता की तरफ बढ़ जाए।

– युद्धरत आम आदमी,
जुलाई–सितम्बर, 2013 से साभार

सम्माननीय विद्वानों तथा सुधी पाठकों की सेवा में

आत्म–निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक समूचे विश्व के आर्यजनों के लिए लोकप्रिय एवं मार्गदर्शक पत्र है कोटि–कोटि आर्य जनता की भावनायें इस पत्र के माध्यम से प्रेरित होती है। आर्यजनों की भावनाओं को और अधिक प्रेरित और उत्साहित करने के उद्देश्य से आर्य जगत के यशस्वी विद्वानों तथा सुधी पाठकों से राष्ट्रीय सामाजिक एवं धार्मिक विचारों से ओतप्रोत विचारोत्तेजक लेख तथा अन्य सामग्री सादर आमन्त्रित है। इसके साथ ही वैदिक सार्वदेशिक आपको कैसा लगता है तथा इसको और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी बनाने के लिए आपके सुझाव तथा प्रतिक्रिया की भी प्रतीक्षा रहेगी। कृपया अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते रहें। अपने लेख सुन्दर, स्पष्ट लिखकर अथवा टाइप करवाकर ई–मेल अथवा डाक द्वारा भेजें तथा अपना पूर्ण पता अवश्य लिखें। धन्यवाद।

– सम्पादक

NDPSo on 19/20 जुलाई, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 18 से 24 जुलाई, 2013
प्रकाशन की तिथि : 18 जुलाई, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी के प्रयासों से

दिल्ली में घरेलू कामगार के रूप में कार्यरत प्रवासी बाल मजदूर राजेश को मिली मुक्ति व पुनर्वास की राह।

मुक्ति के बाद बालक को दिलवाई 1,11,880/– रुपये की राशि

आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में संचालित बंधुआ मुक्ति मोर्चा देशभर में 1,76,000 से भी अधिक बंधुआ एवं बाल मजदूरों को मुक्ति व पुनर्वास की राह प्रदान कर चुका है। देश में व्याप्त बाल श्रम की समस्या समय के साथ निरन्तर बढ़ती ही जा रही हैं। सरकार देश के माथे पर लगे बाल श्रम के कलंक को मिटाने में असफल साबित हो रही है किन्तु बंधुआ मुक्ति मोर्चा जैसे स्वयं सेवी संगठनों के प्रयास से बंधुआ बाल मजदूरों को मुक्ति व पुनर्वास की राह प्रदान की जा रही हैं।

17 वर्षीय बाल बंधुआ मजदूर राजेश मानकी s/o श्री रविसन मानकी गांव गुमनदी, पोस्ट–ककई राजगढ़, जिला नॉर्थ लखिमपुर, असम का रहने वाला है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने केकारणराजेश के माता–पिता असम के तिनीसुकियां जिले के चाय बागान में प्रवासी मजदूर बनकर काम करते थे और राजेश अपने चाचा के साथ असम के नॉर्थ लखिमपुर जिले में रहता था। माता–पिता के प्रवासी मजदूर बनने और गरीबी के कारण राजेश का जीवन शिक्षा से कोसों दूर होता चला गया।

असम के नॉर्थ लखिमपुर निवासी श्री अजय कुमार, राजेश को बहला फुसलाकर किसी अच्छे काम का झांसा देकर दिल्ली ले आया। अजय कुमार ने बालक राजेश को श्रम संगठन आदिवासी आश्रम, 140–मिलन सिनेमा एवं शिव मंदिर के पास, कर्मपुरा, नई दिल्ली के प्रमुख भानू प्रताप को सौंप दिया। श्री भानू प्रताप ने बालक राजेश को साउथ दिल्ली के ग्रीनपार्क क्षेत्र में किसी बंगले में घरेलू काम पर लगा दिया। जहां बालक सुबह 6 बजे से रात 12 बजे तक घर का सारा काम करता था। बालक ने लगभग 2 वर्ष तक दिल्ली में घरेलू कामगार के रूप में काम किया। बालक अपने घर जाना चाहता था किन्तु बंगले का मालिक तथा भानू प्रताप ने बालक को उसके घर जाने नही दिया और बालक से बाल एवं बंधुआ मजदूरी करवाई।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के प्रयास से बालक को मुक्त करवाया गया। श्रीमती नीना नायक, सदस्य, नेशनल कमीशन फोर प्रोटेक्शन ऑफ चाईल्ड राईट्स एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी स्वयं बालक से मिले और बालक का हाल जाना तथा उसे न्याय दिलाने का आश्वासन दिया।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने बालक को चाईल्ड वेलफेयर कमेटी, लाजपत नगर, दिल्ली के सम्मुख पेश कर दिया। चाईल्ड वेलफेयर कमेटी के आदेश पर बालक को अस्थायी रूप से आश्रय प्रदान किया गया जहां बालक ने हिन्दी पढ़ना–लिखना सीखा। संगठन ने उक्त मामले में बराबर फोलोअप करते हुए बालक को समय–समय पर भावनात्मक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। अंत में बंधुआ मुक्ति मोर्चा और चाईल्ड वेलफेयर कमेटी के प्रयास से बालक को 1,11,880 रू0 की राशि प्रदान की गई। बालक को उसके परिजनों के सुपुर्द किया गया और असम के लिए रवाना किया।

बालक ने बताया कि भविष्य में वह स्वयं भी अन्य आदिवासी बालक–बालिकाओं को बंधुआ मजदूरी से मुक्त करवाएगा और प्राप्त राशि का सदुपयोग करते हुए कोई रोजगार प्रारम्भ करेगा।

निर्मल गोराना–कार्यवाहक निदेशक,
बंधुआ मुक्ति मोर्चा, नई दिल्ली

बाल मजदूरी न रोक पाने पर बंगाल सरकार को बाल अधिकार संरक्षण आयोग की फटकार

नई दिल्ली : 14 जुलाई (भाषा) । राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने पश्चिम बंगाल में बाल मजदूरी पर रोक लगाने मे विफल रहने पर राज्य सरकार की खिंचाई करते हुए उसे मानव तस्करी विरोधी इकाई स्थापित करने के लिए और बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए कहा है।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के एक दल ने आयोग के सदस्य योगेश दुबे के नेतृत्व में हाल ही में राज्य का दौरा किया था। इस दल ने इस बात पर नाखुशी जाहिर की थी कि राज्य का श्रम विभाग बच्चों से खतरनाक स्थितियों में काम न लेने के कानूनी निर्देशों का पालन करने में विफल रहा था। दुबे ने बताया, 'श्रम विभाग का प्रदर्शन शोचनीय है। वह बच्चों को उद्योगों, कारखानों और ईंट भट्टों में काम करने से बचाने में विफल रहा है।' उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में बच्चे राज्य के ईंट भट्टों में काम करते हैं और राज्य सरकार के पास इन जगहों पर काम कर रहे बच्चों और कर्मचारियों के पूरे आंकड़े भी नहीं हैं।

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

जब से वैदिक सार्वदेशिक नये रंग रूप में प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ है इसका वेसब्री से इन्तजार रहता है। इसकी ज्ञानवर्धक सामग्री लाभान्वित करने वाली है। 4 से 10 जुलाई का अंक मिला इसमें डॉ. भवानी लाल भारतीय का लेख 'ऋषि दयानन्द क्या थे?' महर्षि के सर्वत्तोमुखी व्यक्तित्व को उजागर करने वाला है। अपने महापुरुषों का गुणगान करने से भावी पीढ़ी को मार्ग दर्शन मिल सकेगा ऐसा मेरा मानना है। वैदिक सार्वदेशिक में महापुरुषों के जीवन चरित्र भी प्रकाशित करें तो आर्यों को उनसे प्रेरणा प्राप्त होगी। धन्यवाद।

– मेहर सिंह, बागपत

वैदिक सार्वदेशिक का अंक अभी–अभी प्राप्त हुआ। इस अंक में पिछले अंकों की तरह अत्यन्त प्रेरणादायी सामग्री का प्रकाशन किया गया है। श्रावणी पर्व नजदीक है और उसी को ध्यान में रखकर श्री मनमोहन कुमार आर्य का लेख अत्यन्त प्रेरणास्पद है। श्रावणी का पर्व ज्ञान का पर्व है आर्य विचारधारा को जन–जन तक फैलाने का पर्व है श्री मनमोहन कुमार आर्य के विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ, हमें योजनाबद्ध ढंग से आर्य विचारधारा को फैलाना चाहिए तभी हम महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार कर पायेंगे।

– रामेश्वर दयाल मिश्र, छपरा, बिहार

सार्वदेशिक सभा जो कि विश्व की आर्य समाजों की सर्वोच्च सभा है उसका मुखपत्र वैदिक सार्वदेशिक के नाम से प्रकाशित हो रहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी के विराट व्यक्तित्व की छाप वैदिक सार्वदेशिक में स्पष्ट रूप से झलक रही है। स्वामी जी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के समाज सुधारक हैं और शराबबन्दी, कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध और दलितों, वंचितों को न्याय दिलाने तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से समाज की अप्रतिम सेवा कर रहे हैं। वैदिक सार्वदेशिक में प्रकाशित सामग्री भी अत्यन्त प्रेरणास्पद तथा समाज को झकझोरने वाली होती है। वैदिक सार्वदेशिक के माध्यम से वे समाज सेवा के कार्य को और आगे बढ़ायेंगे तथा आर्य समाज को उसके नाम के अनुरूप यशस्वी बनायेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। पत्रिका के बदले स्वरूप के लिए धन्यवाद।

– विशेश्वर सिन्हा, माटूंगा, मुम्बई

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

वैदिक सार्वदेशिक के आजीवन सदस्यों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, वैदिक संस्कृति का उद्घोषक पत्र "वैदिक सार्वदेशिक" पूरे विश्व में बसे करोड़ों आर्यजनों का लोकप्रिय एवं मार्ग दर्शक पत्र है। हमारा यह निरन्तर प्रयास रहता है कि इस पत्र के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमूल्य विचारों को जन-जन तक पहुँचाया जाये और मानव मात्र को संस्कारित कर "सादा जीवन उच्च विचार" की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाये। इस कार्य में हमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप वर्षों पूर्व सभा के मुख पत्र के आजीवन सदस्य बनें थे और तब से लेकर निरन्तर आपको यह पत्र नियमित रूप से भेजा जा रहा है। आपको ज्ञात है कि इस मँहगाई के युग में पत्रिका का प्रकाशन कितना कठिन हो गया है। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि "वैदिक सार्वदेशिक का आजीवन सदस्यता शुल्क जो मात्र 2500/– रुपये है एक बार पुनः भेजकर सहयोग प्रदान करें। आपका यह सहयोग महर्षि की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में जहाँ आपको सहयोगी बनायेगा वहीं हमें सम्बल भी प्रदान करेगा।

– सम्पादक

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ
महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना
– सत्यार्थप्रकाश का
११ वां समुल्लास
मंगाये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें
मात्र 20 रुपये सहयोग राशि
10 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 50 प्रतिशत छूट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।